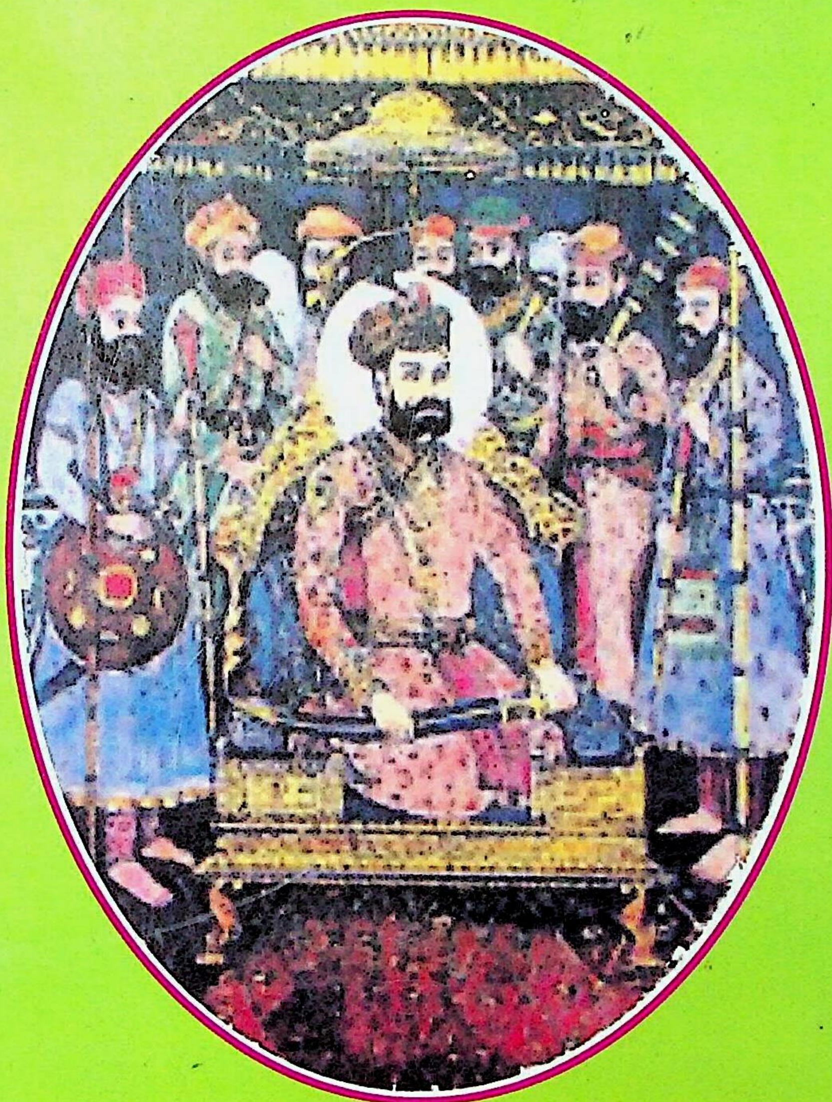
स्वराष्ट्राय स्वाहा सर्वम्

स्वातंत्र्य समर सेनानी

पं० हेमचन्द्र विक्रमादित्य भार्गव वीरत्वम्



डॉ० कृष्णनारायण पाण्डेयः 'भरद्वाज'



पुराण कालीन विश्वम्
प्लक्ष
[गीनलैण्ड]
इक्षु (उत्तरी ध्रुव महासागर)
शालमली
[उत्तरी
अमेरिका]
सुरा
(एटलांटिक
महासागर)
जम्बू
[यूरेशिया]
कुश
[आफ्रीका]
घृत
(अंध
महासागर)
क्षीर
(प्रशान्त
महासागर)
क्रौंच
[दक्षिणी
अमेरिका]
लवण
(हिन्द
महासागर)
शाक
[आस्ट्रेलिया]
क्षीर
(प्रशान्त
महासागर)
दधि
सुस्वाद
(दक्षिणी ध्रुव महासागर)
पुष्कर
[अंटार्कटिका]

9.5

स्वराष्ट्राय स्वाहा सर्वम्

स्वातंत्र्य समर सेनानी

पं० हेमचन्द्र विक्रमादित्य भार्गव वीरत्वम्

डॉ० कृष्णनारायण पाण्डेयः 'भरद्वाज'

एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत, प्राचीन इतिहास, पुराणेतिहासाचार्य, जीवन विज्ञान योग-प्राकृतिक चिकित्सा)

Ph.D. (रामकथा की ऐतिहासिकता), L.T., LL.B.

हिन्दी अनुवाद :

बजरंग लाॅल 'अत्रि'

प्रज्ञा प्रकाशनम्

समन्वय कुटीरम्, ई-१०५२, राजाजीपुरम्, लखनऊ-२२६ ०१७

दूरभाष : (०५२२)-२४१६८९७, चलभाष - ९३०५४२०७४२

मूल्यम् : रु० १००/-

स्वराष्ट्राय स्वाहा सर्वम्

Everything dedicated for our Nation

डॉ० कृष्णनारायण पाण्डेय 'भरद्वाज'

प्रथम संस्करणम् : सृष्टि सम्वत् १,९५,८८,८५,१११
श्रीकृष्णसम्वत् ५२३६
कलिसम्वत् ५१११
विक्रम सम्वत् २०६६
ईस्वी सम्वत् २००९
शालिवाहन राष्ट्रीय सम्वत् १९३१

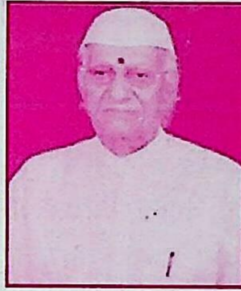


अनुक्रमः

१.	आशीर्वचनम्	३-७
२.	प्राक्कथनम्	८
३.	प्रस्तावना	१०
४.	हेमचन्द्र विक्रमादित्य गाथा	१७
५.	रेवती क्षेत्रे	२७
६.	हिंगलाज शक्तिपीठे	३१
७.	जालंधर शक्तिपीठे	३५
८.	कामाख्या शक्तिपीठे	३९
९.	इंद्रप्रस्थ दुर्गे	४३
१०.	महालक्ष्मी शक्तिपीठे	४७
११.	सप्त सैन्धवे	५१
१२.	स्वाधीनता संग्रामे	५५
१३.	विदेशातंक नाशार्थम्	५९
१४.	स्वातंत्र्य समर सेनानी	६३
१५.	परिशिष्टम्–	
	(१) हेमचंद्र विक्रमादित्य तिथिक्रमः	६७
	(२) अबुलफजल कृत अकबरनामा से	९३
	(३) इतिहासकारों से प्रश्न	९९

मुद्रक :
वैदिक प्रेष,
कैलासनगर, दिल्ली–३१
दूरभाष : २२०८१६४६
चलभाष : ९९६८४४९७७१

आशीर्वचनम्–



शिखरिणी–समाराध्यं राष्ट्रम्

अहिंसायाः स्रोतः प्रवहति विशालं प्रतिपलं,
समेषां धर्माणां प्रचलति विधानं च विशदम् ।
समाराध्या वृत्तिः सुजनचरिता विश्वविदिता,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ॥१॥

समाराध्या गीता भगवदनुगीता सुविदिता,
समाराध्या सीता जनकदुहिता प्रेममहिता ।
समाराध्या दुर्गा जनितशुभसर्गा सुरनुता,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ॥२॥

समाराध्यो रामो दशरथतनूजो रिपुजयी,
समाराध्यः कृष्णो यदनुचरितं भारतमिदम् ।
समाराध्यो गान्धी जनक इव मान्यो ननु नृणां,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ॥३॥

महावीरो बुद्धोऽखिलजनहितो नानकगुरुः,
कबीरो मीरा नो युगपुरुषधीराः सुकृतिनः ।
कलाकाव्यादीनाममृतमधुरं रम्यवचनं,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ॥४॥

अखण्डं सद्रूपं प्रसरतु सदा वैभवयुतं,
समृद्धं सौभाग्यं सुखयतु च लोकं प्रतिदिशम् ।
स्वराज्यं सम्प्रीतं प्रभवतु सुराज्यं च विशदं,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ।।५।।

समाख्यानं यत्र प्रचलति विशेषेण विधिना,
चतुर्णां वेदानां निखिलजनवन्द्यं सुविदितम् ।
पुराणानां गाथा सुखयति च चित्तं जनिमतां,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ।।६।।

ऋतूनां सर्वेषां विलसति च शोभा विकसिता,
सुचित्राणां सृष्टिः सकलसुखदृष्टिश्च सुभगा ।
मनःप्रीतां प्रीतिं जनयति च चित्ते प्रमुदिते,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ।।७।।

निदानं भावानां सुजनगणवन्द्यं सुखकरं,
प्रधानं राष्ट्राणां विकिरति च सौख्यं बहुविधम् ।
प्रियागारं रम्यं भुवनरमणीयं प्रणयवत्,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ।।८।।

वितानं सौराज्यं प्रसरति च देशेऽत्र महिते,
न कः प्रीतिं यातः कथयतु च तथ्यं न वितथम् ।
सदा रक्ष्यं लक्ष्यं भरतवसुधाया अहरहः,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ।।९।।

कलारत्नं गीतं गगनतलरत्नं दिनमणिः,
श्रुतौ भक्तीरत्नं श्रवणपुटरत्नं हरिकथा ।
'समाराध्यं राष्ट्रं' समवचनरत्नं च कथनं,
समाराध्यं राष्ट्रं सकलगुणहृद्यं च सततम् ।।१०।।

–डा० राजदेव मिश्र
प्राक् कुलपति, सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय वारणसी
आलोकपुरी, फैजाबाद, उ०प्र०, चलभाष : 9235421681



प्रसार भारती
PRASAR BHARATI

राज कमल
RAJ KAMAL
उप महानिदेशक
Deputy Director General (ADMN)
Tel : 23421110
23421006/260
Fax : 23422312

आकाशवाणी महानिदेशालय
Directorate General All India Radio
आकाशवाणी भवन, संसद मार्ग
Akashvani Bhavan, Sansad Marg,
नई दिल्ली-110 001
New Delhi - 110 001

शुभाशंसनम्



मध्यकाल में हेमू विश्व के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में से एक था। उसने विदेशी आक्रान्ताओं के विरुद्ध बाईस युद्ध जीते । एकमात्र पानीपत के दूसरे युद्ध में उसकी हार हुई जिसमें वह वीरगति को प्राप्त हुआ । उसके पश्चात् होनेवाले नेपोलियन बोनापार्ट की तरह हेमचन्द्र ने भी अनेकों युद्ध जीते । किन्तु जहां नेपोलियन ने दूसरे राज्यों पर आक्रमण किए वहीं हेमचन्द्र ने आक्रान्ताओं से अपने देश को बचाने के लिए आत्मरक्षार्थ युद्ध किए। इस दृष्टि से हेमू भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अभिनंदनीय अद्वितीय योद्धा था । इस वीर योद्धा के ऐतिहासिक चरित्र से हम अभी तक न्याय नहीं कर पाए हैं । इस पर इतिहासकारों द्वारा कोई शोधकार्य भी नहीं किया गया है। इस संबंध में केवल हेमू विक्रमादित्य के शत्रुओं से ही थोड़ी जानकारी मिलती है जो कि उससे घृणा करते थे ।

आकाशवाणी महानिदेशालय में संयुक्त निदेशक, डा० कृष्ण नारायण पाण्डेय विभिन्न विषयों के विद्वान हैं । वे इतिहासकार, कवि, संस्कृत के प्रचारक ही नहीं एक पर्यटक और ट्रेकर भी हैं। उन्होंने जिस व्यक्ति और स्थान का इतिहास लिखा वहां स्वयं जाकर उसके संबंध में जानकारी प्राप्त की है ।

प्रस्तुत पुस्तक संस्कृत भाषा में हेमू विक्रमादित्य की जीवनी है जो कि एक श्रमसाध्य एवं श्लाघनीय प्रयास है । सुन्दर अनुष्टुप् छन्दों से सुसज्जित यह ऐतिहासिक चरित डा० पाण्डेय की एक अनुपम काव्यकृति है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं ।

हमारा विश्वास है कि इस काव्य के स्वाध्याय से ''स्वराष्ट्र देवो भव'' की भावना की सम्प्रेरणा होगी ।

(राजकमल)



पातंजल योग विद्या प्रतिष्ठान

(छ.ग. राज्य सोसायटी अधिनियम छ.ग. रजिस्ट्रेशन नं. 1282)

"योगमूर्ति" डॉ. किरण कन्नौजे "ज्योति प्रेम"
(योग विज्ञान विशेषज्ञ)
निदेशक-पातंजल योग विद्या प्रतिष्ठान
राष्ट्रीय अध्यक्ष-आयुर्वेद विश्व परिषद्
अध्यक्ष-विश्व धर्म संसद

प्रधान कार्यालय -
लिली चौक, पुरानी बस्ती
रायपुर (छ.ग.)-492001,
मो.-9329104163
E-mail : dr_kannoje@yahoo.com
Web : www.yogkalp.com

इतिहास कथा



धर्मार्थ काम मोक्षार्थम् नीति वाक्य समन्वितम् ।
पुरावृत्त कथा युक्तम् इतिहासः प्रचक्षते ॥

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति हेतु नीति वाक्य समन्वित, प्राचीन घटनाओं से युक्त गाथा को इतिहास कहा जाता है ।

इतिहास की इस भारतीय पारम्परिक परिभाषा के अनुसार केवल युद्धों का वर्णन ही इतिहास नहीं है । मानव इतिहास का आधार मानवता है । यही कारण है कि स्वातंत्र्य समर सेनानी सम्वत् प्रवर्तक शकारि विक्रमादित्य तथा मालवाधिपति राजा भोज जनता में आदर्श लोकनायक हैं परन्तु इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में इन्हें समुचित स्थान नहीं दिया गया है । पूर्वाग्रही इतिहासकारों के कारण राष्ट्रीय शक सम्वत् प्रेरक प्रतिष्ठान नरेश शालिवाहन का इतिवृत्त भी विवाद का विषय बना दिया गया है ।

विविधता में एकता की भारतीय संस्कृति की प्रकृति पूजा का लोक धर्म जीवन्त पुरातत्व के रूप में विश्व प्रसिद्ध है । सत्ता सुख की सरकारी नौकरी के लोभ का त्याग कर स्वदेश की स्वाधीनता रक्षार्थ अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले स्वातंत्र्य समर सेनानियों का अभिनंदन हमारा नैतिक कर्तव्य है । एकेश्वर परम शक्ति से प्रार्थना है—

मैं योगनिष्ठ तुम योगेश्वर, मैं प्रकृति रूप तुम प्रेम वृष्टि ।
मैं शंख सीप तुम स्वाति विन्दु, मैं जीवात्मा तुम दिव्य दृष्टि ॥

हे प्रभो इन्द्रप्रस्थेश्वर पृथ्वीराज चौहान के पश्चात् विदेशी आक्रमणकारियोंकी सत्ता को चुनौती देने वाले अंतिम इन्द्रप्रस्थ दिल्ली सम्राट हेमू विक्रमादित्य की प्रेरक जीवन गाथा की यह अभिनंदनीय शोध पूर्ण प्रस्तुति, भारतीयत्वानुरागी हृदयों में राष्ट्र देवो भव की सरिता प्रवाहित करे—सर्वम् राष्ट्राय स्वाहा इदम् राष्ट्राय इदम् न मम ।

—डा० अमृता किरण "ज्योति प्रेम"

तार : आकाशवाणी
Telegram : AKASHVANI

दूरभाष : 23355892
Telephone : 23715411(EPABX)
टेलीफैक्स/Telefax : 91-011-23710106



एल. एस. वाजपेयी
L. S. BAJPAI
केन्द्र निदेशक
STATION DIRECTOR

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारतीय प्रसारण निगम
Broadcasting Corporation of India
आकाशवाणी
All India Radio

प्रसारण भवन
Broadcasting House
संसद मार्ग, नई दिल्ली-110 001
Parliament Street, New Delhi-110 001
नई दिल्ली-110 001



शुभमस्तु

कवि का एक दायित्व यह भी है कि वह अपनी कविताओं के माध्यम से देश एवं समाज की अतीतकालीन महान उपलब्धियों, परम्पराओं, प्रेरक प्रसंगों महान विभूतियों को न केवल संरक्षित करें वरन् अपने समय के समाज के समक्ष उन्हें प्रस्तुत करके उन्हें जीवन्त बनाए तथा भविष्य के लिए भी एक दस्तावेज के रूप में सुरक्षित कर दे । डा० कृष्ण नारायण पाण्डेय 'भरद्वाज' ने अपने नवीनतम संग्रह 'स्वराष्ट्राय स्वाहा सर्वम्' के माध्यम से यही मूल्यवान प्रयास किया है । इतिहास के सभी विद्यार्थी पानीपत के युद्धों से परिचित हैं किन्तु उनमें से शायद ही कोई हेमचन्द्र के साहस, पराक्रम, संगठन क्षमता, प्रशासनिक कौशल, देशप्रेम, संघर्ष, बलिदान से परिचित हो । एक ऐसे चरित्र को अपनी लेखनी के केन्द्र बिन्दु में रखकर एक विस्तृत काव्य की रचना करना श्रमसाध्य कार्य है किन्तु अनूठा भी । कोई भी भाषा हो ऐसी ही रचनाओं से समृद्ध होती है । यह खण्ड काव्य कृति हेमचन्द्र के व्यक्तित्व के अनेकानेक आयामों को तो हमारे सामने लाती है साथ में अनेक सामाजिक मूल्यों, राष्ट्रप्रेम, साहस, स्वाभिमान, सर्वोच्च बलिदान आदि को भी पाठकों के मन मस्तिष्क में स्थापित करती है ।

डा० पाण्डेय की यह काव्यकृति संस्कृत-संस्कृति के प्रेमियों को अवश्य ही आनन्दित करेगी ।

इस काव्यकृति के लिए अनेकानेक शुभ कामनाएं !

गुरुनानक जयंती
सोमवार, कार्तिक पूर्णिमा 2066 विक्रमी

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी
लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

प्राक्कथनम्—

संस्कृताभिलेखानुसारम् पृथ्वी ग्रहस्य तिथिक्रमः

[पृथ्वी ग्रहस्य मानवीय मूल्य प्रेरक इतिहासः]

१. **सृष्टि सम्वत् समये**—१९५ कोटि वर्ष पूर्वम् । प्रथम मानव स्वाम्भुव मनु शतरूपा जन्म भूमि ब्रह्मपुरी लोकपाल तीर्थम् कैलासपुरी विशाला बद्रीनाथ मध्ये हेमकुण्ट साहेब क्षेत्रे प्रथम राज्य ब्रह्मावर्तम् राजधानी—बर्हिष्मती, वराहकलां खरकराम, जीन्द हरियाणा प्रांते सरस्वती नदी तटे । प्रथम मानव निर्मित दुर्गम्—ध्रुव किला मंदिरम् ब्रह्मावर्त बिठूर कानपुरे । आदिनाथ ऋषभदेव जन्म । स्वातंत्र्य समर सेनानी भक्त प्रह्लादः । आर्य समाज मंदिर अभिलेखः मथुरा नगरे ।

२. **सतयुगे**—१२२२ लक्ष वर्ष पूर्वम् । द्रविणेश्वर वैवश्वत मनु नौका यात्रा—कृत माला समुद्र संगम अटंकराई रामनाथपुरम् तमिलनाडुतः मनुस्थली—मनाली हिमाचले । सूर्यवंशी स्वातंत्र्य समर सेनानी सगर द्वारा भक्त ध्रुव जन्म तीर्थ पाण्डुपुरी, पडरीकलां, उन्नावे सगरेश्वर मंदिर स्थापनम् । राज समुद्र अभिलेखः राजस्थाने।

३. **त्रेतायुगे**—८६९ सहस्त्र वर्ष पूर्वम् ८६७१०२ ई०पू० तः पूर्वम् महर्षि वाल्मीकि रामायण नायक अयोध्या नरेश श्री राम सम्वत् १,२५,५६,१०० ई०पू० तः। स्वातंत्र्य समर सेनानी हनुमानः तीर्थंकर विमलमति जन्म । पशुपतिनाथ अभिलेखः नेपाले ।

४. **द्वापरयुगे**—३१०२ ई०पू० तः पूर्वम् । महाभारत कार महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास जन्म ३२९८ ई० पू०, अष्टमेशावतारः श्रीकृष्णः ३२२६-३१०२ ई०पू० हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, मथुरा, द्वारका, काशी, उज्जैन, कांची, राजग्रह, प्रतिष्ठापुर प्रसिद्ध नगराणि। स्वातंत्र्य समर सेनानी पाण्डव भीमः । ऐहोल अभिलेखः कर्नाटके द्वापर सम्वत् अभिलेखः कम्बोडिया देशे ।

५. **कलियुग**—प्रथम सहस्त्राब्दी ३१०२-२१०२ ई०पू० । नैमिषारण्ये, स्वायम्भुव मनुशतरूपा तपोभूमि तीर्थ व्यासाश्रमे १. वेद, २. मानवधर्म शास्त्र, मनुस्मृति, ३. रामायण, ४. महाभारत, ५. पुराण संस्करण लोकार्पणम् । स्वातंत्र्य समर सेनानी जनमेजयस्य किष्किंधा ताम्रपत्रम् ८९ युधिष्ठिर सम्वत् ।

६. **कलियुग द्वितीय सहस्त्राब्दी**—२१०२-११०२ ई० पू०। नवमेश अवतार सिद्धार्थ बुद्धः १६२०-१५४० ई०पू० । चाणक्य क्रांतिः ११२९ ई०पू०, उज्जैन, विदिशा, पाटलिपुत्र अयोध्या दुर्गेषु क्रांति ज्वाला जागरणम् । स्वातंत्र्य समर सेनानी कौशाम्बी नरेश उदयन स्नेह साम्राज्यम् १५८६-१५४८ ई०पू० । कलियुग सम्वत् अभिलेखाः ।

७. **तृतीय सहस्त्राब्दी**—११०१-१०२ ई० पू० । महावीर ५९९-५२७ ई०पू० शंकराचार्य ५०७-४७५ ई० पू० । महर्षि पतंजलि योग सूत्रम् क्रियान्वितम् । स्वातंत्र्य समर सेनानी सेनापति पुष्यमित्र क्रांतिः ९९० ई०पू० अयोध्या नगरे अश्वमेध यज्ञायोजनम्। अयोध्या अभिलेखः ।

८. **चतुर्थ सहस्त्राब्दी**—१०१ ई० पू०-८९८ ई० । शकारि विक्रमादित्य कालिदास समय ५७ ई० पू०, शालिवाहन सम्वत् प्रवर्तक ७८ ई०। स्वातंत्र्य समर सेनानी कदम्ब मयूर शर्मा ३४०-३७० ई० । हर्षवर्धन ६०६-६४७ ई० । फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग चीनी यात्री, पर्यटनम् । द्वारका शंकरमठ सुधन्वा/तालगुण्ड कदम्ब कर्नाटक अभिलेखाः।

९. **पंचम सहस्त्राब्दी**—८९९-१८९८ ई० । कवि राजा भोजः १००५-१०५५ ई०, राजेन्द्र चोलराजः १०१४-१०४४ ई०, इंद्रप्रस्थेश्वर पृथ्वीराज चौहानः ११७६-११९२ ई०, स्वामी विद्यारण्यः विजयनगर साम्राज्य संस्थापकः १३३६ ई०, राणा कुम्भा १४३३-१४६८ ई०, शंकरदेवः १४४९-१५६८ ई०, तुलसीदासः १४९७-१६२३ ई०, स्वातंत्र्य समर सेनानी हेमू विक्रमादित्यः १५०१-१५५६ ई०, राणा प्रतापः १५३९-१५९७, शिवाजी १६२७-१६८० ई०, प्राणनाथः १६१८-१६९८ ई० । शिवाजी स्वर्णमुद्रा गोवा अभिलेखाः ।

१०. **षष्ठ सहस्त्राब्दी**—१८९९ ई०-वर्तमानम् । दयानंद, विवेकानंद, सांई बाबा, स्वातंत्र्य समर सेनानी सुभाषचंद्र बोस, महर्षि अरविंद, प्रभुपाद, श्रीराम शर्मा, आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ, महर्षि महेश योगी, संस्कृतानंद ब्रह्मानंद, आसाराम बापू, स्वामी रामदेव, अमृतानंद माई, रवि शंकर मानवता प्रचारकाः। तपोभूमि गोवा अभिलेखाः।

शोधकार्य—**डा. कृष्ण नारायण पाण्डेय 'भारद्वाज'**

प्रस्तावना

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि डा० कृष्णनारायण पाण्डेय ने हेमचन्द्र विक्रमादित्य पर संस्कृत में चरित काव्य लिखा है जोकि पं० बजरंग लाल अत्रि द्वारा हिन्दी में अनुवाद किया गया है । मैं इस कार्य के लिए लेखकद्वय का अभिनन्दन करता हूं ।

सबसे बड़ी चीज जो हेमचन्द्र विक्रमादित्य के व्यक्तित्व को हमारे सामने स्पष्ट करती है और जिसके आधार पर हमने उनके व्यक्तित्व को समझा है उनका मूल्यांकन किया है वह है अबुल फज़ल द्वारा लिखा गया "अकबरनामा" । मेरे पास इस अकबरनामा का अनुवाद है जो डॉ० मथुरालाल शर्मा ने पारसी से हिन्दी में किया है । यह अत्यन्त प्रामाणिक पुस्तक है ।

अकबरनामा में हेमू को बक्काल लिखा गया है । अबुल फज़ल ने यह बक्काल शब्द शायद बनिये या व्यापारी के लिए किया है । अबुल फज़ल ऐसा क्यों कहता है, जाहिर है, वह अकबर का सेवक था । अकबर की प्रशस्ति में लिख रहा था। उसने अपने शत्रुओं को अपने विपक्षियों को इतना घिनौना, इतना सूक्ष्म, इतना बेमानी बतलाने की कोशिश की है । इसलिए उसने हेमचन्द्र विक्रमादित्य के लिए बक्काल जैसे शब्द का उपयोग किया ।

अबुल फज़ल के अनुसार अकबर के सेना नायक मौलाना पीर मोहम्मद द्वारा हेमू के पिता पूर्णदास का इसी क्षेत्र में बंदी बनाया जाना लिखा है । उस समय रिवाड़ी, कानोड़ तथा नरतल इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थान थे । उस समय भार्गव समाज ढूसर के नाम से जाना जाता था तथा भार्गव समाज ढोशी पर्वत (नारनौल के समीप) के करीब १५० मील की परिधि में बसे नारनौल, रेवाड़ी, बावल, अलवर, माघेरी, बोहड़ा, कामा, बहरोड़, कोटकाणीय आदि कस्बों में बसे हुए थे । जहां तक हेमू की जाति का सम्बन्ध है वह ढूसर जाति का था। परन्तु मुस्लिम इतिहासकारों ने उसे बक्काल के रूप में दर्शाया था । जिससे अभिप्राय कोई जाति अथवा सम्प्रदाय से नहीं है । स्टेनलेस के अंग्रेजी व फारसी कोष के अनुसार भारत में इसका अर्थ अनाज

का व्यापारी बताया गया है परन्तु तत्कालीन भारत में यह एक धूतामूलक शब्द जिसका प्रयोग लेखक किसी व्यक्ति की निंदा करने के लिए आवश्यक समझता था। स्वयं अबुल फजल ने अकबरनामे में एक मुस्लिम सेनानायक को इन शब्दों में 'बक्काल' कहा है । ईदी रीजा और अब्दुल मकरी का पुत्र हुसेन मकरी ने काश्मीरी फेरी वाले (बक्काल) ख्वाजा हाजी पर, जो मिर्जा के कार्यों का मैनेजर था, विजय प्राप्त की ।

लगभग सभी विवरण कर्ता तथा इतिहासकार इस विषय में सहमत हैं कि हेमू रेवाड़ी का निवासी था तथा उनके जाति भाई आज भी रेवाड़ी और कुतुबपुर में बसे हुए हैं । उनमें से कुछ लोग तो यथार्थ में उसे ही हेमू की जन्मभूमि मानते हैं । जैसे कि 'वीर हेमू' पुस्तक के रचयिता श्री भगवान देव आचार्य ने हरियाणा की विभूतियाँ (१९६४) में चरितार्थ किया है ।

ढूसर मध्यकालीन भारत में दो वर्ग के थे । एक ढूसर, जो अपने को भृगुवंशी ब्राह्मण मानते थे, भार्गव कहलाए । दूसरे बनिये कहलाए। भगवत मुदित के अनुसार पहले ढूसर परिवारों को आदी रेवाड़ी से बंदी बना लाए थे परन्तु वह बनिक निकले। जिन्हें छोड़कर तब "ढूसर पकरे" और उन्हें बंदीगृह में डाल दिया गया । इसका वर्णन संत नवलदास की गाथा एवं अकबर के फरमान के अनुसार नाभमल को जागीर देने और कानोड़ निवासियों की वंशावलियों में है । हेमू वंश के बहुत से परिवार अब भी कानोड़ से ही अपना उद्भव बताते हैं । भार्गव परिवार ब्राह्मण होते हुए भी ढोसी पर्वत से अपने नाम की उत्पत्ति होने के कारण ढूसर जाने जाते थे । ढोसी पर्वत च्यवन ऋषी शाखा का पवित्र स्थान था तथा एक मंदिर चोटी पर आज भी बना हुआ है ।

उपरोक्त तथ्यों में हेमू के भार्गव होने का सम्बन्ध है वह एक ओर नाथमल आत्मज महिपाल पुत्र नौबतराय, पौत्र-राय जयपाल तथा दूसरी ओर गोलश गोत्र तथा शुक्रा कुलदेवी होने से सत्यापित होता है। हेमू के बचपन के समय उत्तरी भारत में इब्राहिम लोदी राजपुताना में महाराणा संग्रामसिंह तथा अन्य छोटी छोटी मुल्तान, सिंधु जैसी रियासतें थीं । जब बाबर समरकन्द से निराश होकर हिन्दुस्तान की तरफ बढ़ने का फैसला ले रहा था

उस समय हेमू ने अपनी कर्मस्थली 'माछेरी' से निकलकर 'कुतुबपुर' रेवाड़ी को बनाया । हेमू ने २६ साल की उम्र में नमक व खाने के सामान के व्यापार को कुशलता पूर्वक आगे बढ़ाया तथा उसकी गिनती रेवाड़ी व नारनौल के आसपास के कस्बों के प्रमुख व्यापारियों में होने लगी ।

उस समय दिल्ली से ईरान जाने का रास्ता रेवाड़ी व नारनौल से होकर जाता था । उस समय नारनौल व रेवाड़ी में भारतवर्ष के भावी सम्राट एक मध्यवर्गीय परिवार के सदस्य के रूप में पनप रहेथे, ऐसा किसी को पता न था । नारनौल में शेरशाह सूरी व रेवाड़ी में हेमू का परिवार था । २६ दिसम्बर १५३० को बाबर क़ी मृत्यु के पश्चात् ३० दिसम्बर को हुमायूँ दिल्ली की गद्दी पर बैठा तब ३० वर्षीय हेमू एक कुशल व्यापारी व प्रशासक के रूप में जाना जाता था। हेमू की प्रारंभिक शिक्षा रेवाड़ी एवम् नारनौल में फारसी, हिन्दी व उर्दू भाषा में हुई। वह ७ फीट लंबा तथा उसके हाथ लम्बे होने के कारण घुटनों के नीचे लटकते थे । लम्बी बांहें महापुरुषों के लक्षण माने जाते हैं । शेरशाह सूरी नारनौल छोड़कर सहसराम बिहार में अपने पिता की जागीर संभाल रहा था परन्तु नारनौल से विशेष प्रेम होने के कारण पिता का मकबरा व कई अन्य यादगार इमारतें वहां पर बनवाई । शेरशाह सूरी का लड़का इस्लाम शाह सूरी हेमू की उम्र का था । दोनों का परिचय काफी बढ़ चुका था तथा उसे हेमू की काबिलियत पर भरोसा था । १५४० से १५४५ तक शेरशाह सूरी ने हुमायूं को भारत से खदेड़कर उत्तरी भारत में अपना साम्राज्य फैलाया । अचानक १५४५ में शेरशाह सूरी की बारूदी विस्फोट से कलिंजर में मृत्यु हो गई । इस्लामशाह सूरी अपने बड़े भाई आदिल शाह सूरी के विरोध के बावजूद भी १५४५ में भारतवर्ष का सम्राट बना । तथा हेमू की काबिलियत को जानकर उसे अधीक्षक बाजार और गुप्तचर विभाग जैसे पद पर नियुक्त किया तथा १५५४ तक ८ सालों में ही ईस्लामशाह सूरी का सबसे काबिल व विश्वासपात्र माने जाने लगा तथा एक कुशल व विश्वासात्र प्रशासक के रूप में उभर कर आया ।

संयोग की बात है कि ईश्वर ने मुझे ऐसे कुल में पैदा

किया जो हेमचन्द्र विक्रमादित्य का है । हेमचन्द्र विक्रमादित्य नमक के शोरे का व्यापार कर रहा था, जो बारूद बनाने के काम में आता था । हम यह बहुत अच्छी तरह से जानते हैं । शेरशाह सूरी ने काबुल से लेकर बंगाल तक अनेक वर्षों तक राज्य किया और सड़कों का जाल बिछाया, तब उसने गंधार से जालंधर, लाहौर, दिल्ली, आगरा, अजमेर, पटना पूरे देश के एक भाग को दूसरे भाग से पूरी तरह जोड़ा । जगह-जगह सराय बनाई और सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष लगाये ।

शेरशाह सूरी एक बहुंत ही दूरदर्शी व्यक्ति था । उसने यह चाहा होगा कि एक ऐसे व्यक्ति को जो उसकी सेना को बारूद सप्लाई कर सकता है, वह केवल उसके साथ रहे और शत्रु उसका फायदा न उठाये। इसलिए उसने हेमू को अपने प्रशासन का अंग बना दिया । शेरशाह सूरी ने एक जबरदस्त काम किया। उस वक्त आज के जैसे संचार माध्यम नहीं उपलब्ध थे, उसने पूरे देश में अनेक ऐसी चौकियां स्थापित कीं जहां डाक के जरिये तुरन्त सूचनाएं भेजी जा सकें । परन्तु महत्वपूर्ण काम था जासूसी करना कि कहीं राज्य के खिलाफ, सल्तनत के खिलाफ, बादशाह के खिलाफ कोई बगावत तो नहीं कर रहा है अथवा सेनाधिकारी के खिलाफ कोई बात तो नहीं है। कहीं गांव में, कहीं दूर क्षेत्र में सेना को भड़काने की कोशिश तो नहीं की जा रही है । हर बात की सूचना तत्काल शेरशाह सूरी तक पहुंच सके उसके इस प्रयास का जिक्र अकबरनामा में है । खासतौर पर भारतीय विद्या भवन की पुस्तक The Mugal Emipre में । बहुत बढ़िया किताब मजूमदार साहब ने लिखी है, उसमें विस्तार से लिखा है, ऐतिहासिक प्रमाण हैं । शेरशाह सूरी ने हेमचन्द्र को डाकिया-ए-चौकीदार जैसा महत्वपूर्ण पद दिया जबकि उसकी सेना में जितने भी पदाधिकारी थे, उनमें से ९० प्रतिशत अफगान थे और बड़े सेनाधिकारी तो सारे के सारे मुसलमान थे । पहला उदाहरण मिलता है जब शेरशाह सूरी ने किसी हिन्दू को, उनकी दृष्टि में किसी विधर्मी को इतना बड़ा स्थान, इतना बड़ा विश्वास का पद दिया है ।

शेरशाह सूरी के बाद इस्लाम शाह सूरी गद्दी पर बैठा ।

इस्लाम शाह सूरी ने हेमू को अपना सिपहसालार बनाया । जब विदेशी आक्रमणकारियों ने आक्रमण करने की कोशिश की और शेरशाह की सेना के पदाधिकारियों ने कोताही बरती । उनके रिश्तेदारों में बहुत झगड़े हुए तब इस्लामशाह सूरी को उन पर भरोसा नहीं रहा कि पता नहीं कब बगावत कर देंगे और गद्दी पर कब्जा कर लेंगे तो उसने हेमू को जिम्मेदारी दी और अपनी सेना का अध्यक्ष बना दिया ।

ऐसे नाजुक और खतरनाक मौकों पर हेमचन्द्र ने अपनी सेवाएं अर्पित कीं और कहा कि मैं यह दायित्व लेने को तैयार हूं । मजे की बात यह है कि २२ लड़ाईयां जो लड़ीं हेमचन्द्र ने वह अपने लिए नहीं लड़ीं । वह इस्लाम शाह सूरी के लिए और फिर आदिल शाह सूरी के लिए लड़ीं और वह एक भी युद्ध नहीं हारा । यह अकबरनामा कहता है कि २२ लड़ाइयों में हेमचन्द्र एक खौफनाक योद्धा था, जिस तरह से हरिसिंह नलवा के बारे में हम इतिहास में पढ़ते हैं कि काबुल की जो पठान औरतें थीं उसका नाम सुनकर उनके गर्भ गिर जाया करते थे कांप जाया करती थीं । इसी तरह हेमचन्द्र के नाम से जो आक्रमणकारी सेनाएं थीं उनके दिल और दिमाग पर क्या असर पड़ता था, यह तथ्य इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

कहा जाता है कि अकबर पूरी भारतीय राजनीति में पहला शासक था जिसने सर्वधर्म समभाव यानि हिन्दू-मुस्लिम एकता की नींव रखी । बिल्कुल गलत है मैं इसको चुनौती देना चाहता हूं । इसकी नींव रखने वाला अकबर नहीं इसकी नींव रखने वाला निश्चय ही हेमचन्द्र विक्रमादित्य था। ज़ब हुमायूं ने आक्रमण किया, जालंधर से दिल्ली की तरफ आया तो आदिलशाह ने कहा कि मैं तो चिनार (ग्वालियर) में सुरक्षित हूं, मैं लड़ने के लिए नहीं जाता और जो अफगान सैनिक थे उन्होंने एकमत से हेमू को नेतृत्व प्रदान किया कि आप नेता हैं । कोई खूनखराबा नहीं हुआ । हेमचन्द्र जब नेता बने, उन्होंने किसी का हक नहीं मारा यह फिर इतिहास कहता है । बाकि सारे के सारे बादशाह खूनखराबा करके, किसी की गर्दन काटकर, किसी का कत्ल करके, राजा बने परन्तु हेमचन्द्र सम्राट इस तरह से नहीं बने यह अबुल फज़ल कहता है, इतिहास

कहता है । सारे अफगान पठानों, मुसलमानों ने एक हिन्दू को सर्वसम्मति से अपना नेता स्वीकार किया और कहा कि आपके नेतृत्व में हम लड़ाई लड़ने को तैयार हैं ।

एक भी खून हेमू ने सत्ता प्राप्ति के लिए नहीं किया । दो बातें महत्वपूर्ण हैं, पहली बात यह कि हिन्दू मुस्लिम एकता की भारतीय राजनीति में नींव रखने वाला पहला व्यक्ति, पहला सम्राट अकबर नहीं हेमू था—इतिहास इस बात का साक्षी है । दूसरी बात यह कि हेमू के साथ लड़ने वाले जो अधिकारी थे, उनमें ९० प्रतिशत से अधिक मुसलमान १० प्रतिशत राजपूत और उनके अपने जाति भाई आदि भी थे जो पानीपत की लड़ाई में मारे गए थे । लेकिन ९० प्रतिशत लोग जो विधर्मी थे वह अगर एक हिन्दू शासक के नेतृत्व में काम करने वाले थे तो हेमू ने कैसे दिल जीता होगा, इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है ।

अकबर को शेरदिल अफगानों के विरुद्ध ५ से ६ वर्षो तक संघर्ष करना पड़ा जबकि हेमू की जाति के लोग ढूसरों ने किसी धोबी, हलवाई, तेली, दहीवाले के यहां छिपकर अपनी जान बचाई । इसी कारण भार्गवों के कई कुलों में विचित्र काम है ।

हेमू की मृत्यु के पश्चात् संत नवलदास जो कि राधा-वल्लभी संप्रदाय के कर्ता, संत और संस्थापक अकबर के समकालीन तथा ढूसर जाति से संबंधित थे, को ढूसरों की रक्षा करने पर बादशाह अकबर ने उनकी जाति पूछी । नवलदास जी ने कहा हरी भक्तों की कोई जाति नहीं होती । तब अकबर ने उन्हें कारागार में डाल दिया । संतश्री ने रात को कारागार से निकल कर अकबर को कहा कि मैं जा रहा हूं । तब बादशाह उनसे इतने प्रभावित हुए कि उनके कहने पर सब ढूसरों को इससे पूर्व इशिकमाल के लेखक द्वारा दोहों से हमें पता चलता है कि केवल हेमू की जाति को संबंधित रेवाड़ी के ढूसरों को बंदी बनाया गया था ।

हेमू कुल पकड़न को धाय, दोय शत रेवाड़ी से लाए ।
बंदी किये बहुत मास दिखाए, ढूरे छिपे तिनही बताए ।
ढूसर तो अब कोई नाही, एक रहो वृन्दावन माही ।
तब वृन्दावन अहदी आए, नवलदास जी को ले पहुंचाए ।

एक और बहुत बड़ी बात है, कि बिहार के आंतरिक क्षेत्र में आज तक हेमू से सम्बन्धित लोकगीत गाये जाते हैं । अगर सेनाएं दुश्मन से लड़ने के लिए जाती हैं तो गांवों को, नगरों को, खेतों को बरबाद करती हुई जाती हैं क्योंकि उन्हें रसद की जरूरत होती है, पैसे की जरूरत होती है । आम आदमी को रौंदती हुई जाती हैं । हेमू ने लड़ाईयां लड़ीं बिहार तक, बंगाल तक और ऐसा दिल जीता कि लोकगीतों का नायक बन गया और आज तक नायक है । प्रजातन्त्र का पहला स्वरूप मध्यकालीन भारत में हमें हेमू के द्वारा नज़र आता है, जहां उसने लोगों की भावनाओं को शिरोधार्य किया और उनके साथ आगे बढ़कर काम किया, देश को आक्रमणकारियों से बचाया । यह जो लोकगीतों का नायक है यह जाहिर करता है कि हेमचन्द्र विक्रमादित्य की राजनीतिक दूरदर्शिता कैसी थी । जब वह वहां दरोगा-ए-चौकीदार या सेनाधिकारी था, आदिलशाह की नौकरी कर रहा था, पर उसने हिन्दुस्तान के लोगों का दिल कैसे जीता होगा इसके बारे में हमें ज्यादा अनुमान लगाने की जरूरत नहीं है ।

बहुत सारे तथ्य ऐसे हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि हेमचन्द्र विक्रमादित्य के व्यक्तित्व के साथ जो न्याय होना चाहिए था नहीं हुआ । इतिहासकारों ने अपनी अक्ल लगाने की जरूरत नहीं समझी। अपने दिलो-दिमाग पर जोर डालने की कोशिश नहीं की । नये सिरे से उसकी व्याख्या करने की चेष्टा नहीं की। जो कहता रहा अबुल फज़ल उसी को मानते रहे और आज तक भी मान रहे हैं। अपने इतिहास की नए सिरे से व्याख्या करने की, हेमचन्द्र विक्रमादित्य के गौरव को पुर्नप्रतिष्ठापित करने का, यह समय है। शहर-शहर में आप अपनी स्थानीय सभाओं में इतिहास के जो विद्यार्थी हैं उनको आकर्षित करें। इसलिए नहीं कि वह हमारे वंश का व्यक्ति था, इसलिए कि वह हिन्दू था, राष्ट्रनायक था और इतिहास ने उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय किया । जो अपेक्षित न्याय है वह एक ऐसे आदमी को दिलवाना है, उसके लिए हम कृतसंकल्प हैं । यही समय है कि हेमचन्द्र विक्रमादित्य का जो छिना हुआ गौरव है उसको पुनर्प्रतिष्ठापित करें ।

पं० राकेश भार्गव
रेवाड़ी



हेमचन्द्र विक्रमादित्य गाथा

भारत पर विदेशी आधिपत्य की स्थापना के पश्चात् हेमचन्द्र भार्गव पहले भारतीय थे जिसने विदेशी शासन को समाप्त कर भारतीय स्वराज्य स्थापित करने का प्रयास किया । पं० राहुल सांकृत्यायन ने हेमू को रौनियार वैश्य बताया क्योंकि पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं वैशाली क्षेत्र के सार्थवाह समुदाय रौनियार वैश्यों में हेमू के जीवन और युद्धों पर लोकगीत प्रचलित हैं । मध्यकाल में रौनियार सार्थवाह पूर्वी भारत में माल परिवहन का कार्य वंश परम्परागत रूप से करते थे । इन परिवारों में हेमू की वीरता, युद्धों से संबंधित पंवाड़े विवाह आदि अवसरों पर गाये जाते हैं । किन्तु हेमू की याद रौनियार वैश्यों में उनका पूर्वज होने के कारण नहीं थी बल्कि हेमू ने अनेकों युद्धों में मुगल लुटेरों को समाप्त कर सार्थवाहों की रक्षा की व्यवस्था की थी इसलिये वैश्य समुदाय में हेमू की याद में पंवाड़े गाए जाते हैं। इतिहासकार अग्रचन्द्र नाहटा ने सांकृत्याान जी के विचार की आलोचना करते हुए लिखा कि यह तो निश्चित है कि विक्रमादित्य हेमू रेवाड़ी का धूसर था । इस प्रकार हेमू के संबंध में अनेकों भ्रांतियां विख्यात इतिहासकारों की रही है क्योंकि उन्होंने मध्यकालीन अपुष्ट स्रोतों और शत्रुओं के कथनों का सहारा लेकर निष्कर्ष निकाले । हेमू के पिता राय पूर्णदास राजस्थान के आधुनिक अलवर जिले में स्थित मछेरी या मच्छारी गांव के रहने वाले भृगुवंशी दूसर ब्राह्मण थे । इसी गांव में हेमचन्द्र अथवा हेमू का जन्म विजयादशमी, विक्रमी संवत् १५५८, अर्थात् सन् १५०१ ईस्वी में हुआ। तत्कालीन कठिन परिस्थितियों में आजीविका की खोज में वे मछेरी छोड़कर रेवाड़ी के कुतुबपुर गांव, जिसे आजकल हेमूनगर के नाम से जाना जाता है, में बस गए । रेवाड़ी में राय पूर्णदास ने परम्परागत पुरोहिती को छोड़कर नमक का व्यापार प्रारम्भ किया । वे वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी तथा

एक आस्तिक हिन्दू थे और उन्होंने मथुरा, वृन्दावन, हरिद्वार, सिंध आदि तीर्थों की यात्राएं की थीं । बाल्यकाल में हेमू ने हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी तथा गणित की पढ़ाई की। उसने कुश्ती, घुड़सवारी, शस्त्रचालन आदि विद्याओं में निपुणता प्राप्त की। एक राजपूत सहदेव उनके बाल्यकाल से ही मित्र थे जोकि पानीपत के युद्ध को छोड़कर सदा उनके साथ रहे ।

बड़े होने पर हेमू ने खाद्य पदार्थों का व्यापार कर लिया । वे शेरशाह सूरी की सेना को खाद्यान्न, बारूद आदि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करने लगे । कुछ समय पश्चात् उन्होंने कांसे की तोप निर्माण का उद्योग स्थापित कर लिया । हेमू एक विद्वान ब्राह्मण, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, साहसी योद्धा तथा चतुर व्यापारी थे । अतः उन्होंने शेरशाह सूरी के उच्चाधिकारियों में अच्छी पैठ बना ली जिससे उसके पुत्र इस्लामशाह से भी उनके घनिष्ट संबंध बन गए । १५४८ ईस्वी में शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद इस्लामशाह दिल्ली का शासक बना और उसने हेमचन्द्र की चतुराई, वफादारी, वीरता, प्रबन्धकीय एवं प्रशासनिक गुणों को देखकर उन्हें शाहाना-ए-बाजार अर्थात् बाजार अधीक्षक नियुक्त किया जिसका काम सूर साम्राज्य के समस्त बाजारों के प्रबन्ध एवं व्यापारिक गतिविधियों को व्यवस्थित करना था । साम्राज्य के व्यावसायिक कार्यों में हेमू इस्लामशाह से बार-बार मिलते थे और अपनी प्रतिभा एवं परिश्रम से उस पर गहरा प्रभाव डाला । अतः इस्लामशाह उससे न केवल व्यापारिक अपितु राजनीतिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत विषयों पर भी सलाह लेने लगा । इससे वे इस्लामशाह के निकट सहयोगी बन गये और १५५० ईस्वी में रोहतास के किले में हुमायुं के भाई मिर्जा कामरान के स्वागत के लिए इस्लामशाह हेमू को भी अपने साथ ले गया। कुछ समय बाद इस्लामशाह ने हेमू को दरोगा-ए-चौकी अर्थात् गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया ।

३० अक्तूबर, १५५३ ईस्वी में इस्लामशाह की मृत्यु हो गई तथा उसका बारह वर्षीय पुत्र फिरोजशाह गद्दी पर बैठा किन्तु जल्दी ही उसके निकट संबंधी आदिलशाह ने उसकी हत्या कर दी और स्वयं भारत सम्राट बना । आदिलशाह एक आलसी,

शराबी, व्यसनी तथा आत्मप्रशंसा को मानने वाला व्यक्ति था। हेमचन्द्र के व्यक्तित्व, परिश्रम एवं कार्यकुशलता ने उस पर गहरी छाप छोड़ी, अतः उसने हेमू को अपना प्रधानमंत्री एवं प्रधान सेनापति नियुक्त कर राजकाज का सारा भार उन पर छोड़कर ऐशो-आराम का जीवन बिताने लगा। अबुल फजल ने लिखा है कि बादशाह तो आदिलशाह था किन्तु वास्तव में शासन चलाने वाला हेमू था। इस प्रकार साम्राज्य की प्रशासनिक, सैनिक, न्यायिक समस्त शक्तियां हेमू ने हस्तगत कर लीं। अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए हेमू ने अयोग्य व्यक्तियों को हटाकर अपनी पसन्द के अधिकारियों को नियुक्त किया। उसने सेना में भी अपनी गहरी पैठ बना ली।

आदिलशाह की अयोग्यता का लाभ उठाकर क्षेत्रीय सरदारों ने अपने-अपने प्रांतों में स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। ताजखां किरानी ने दक्षिण बिहार, बाज बहादुर ने मालवा तथा मोहम्मदखां सूर ने बंगाल पर अधिकार कर लिया। इब्राहिम खां सूर, अहमद खां सूर तथा मोहम्मदखां सूर दिल्ली के सिंहासन पर अपना-अपना दावा पेश करने लगे। तत्कालीन इतिहासकार नियामतुल्ला के अनुसार–प्रत्येक प्रांत और गांव विद्रोह की लपटों में थे। हेमू ने १५५३ से १५५५ के दो वर्षों के दौरान २२ युद्ध जीतकर उत्तरभारत, मध्यभारत, बिहार, बंगाल सभी प्रान्तीय विद्रोहों का दमन किया। इन्हीं राजनीतिक अव्यवस्थाओं का लाभ उठाकर हुमायुं ने २३ जुलाई, १५५५ ईस्वी में आदिलशाह के भाई सिकन्दरशाह को पराजित कर पंजाब, आगरा तथा दिल्ली पर अधिकार कर लिया। आदिलशाह भागकर हेमू के पास चला गया। उस समय हेमू बंगाल में युद्धरत था।

२६ जनवरी, १५५६ को पुराने किले में स्थित शेरमण्डल से गिरकर हुमायुं की मृत्यु हो गई। आदिलशाह ने दिल्ली पर कब्जा करने के लिए हेमू को भेज दिया और स्वयं बंगाल में ही ठहर गया। हेमू ने सात हजार घुड़सवार, २० हाथी तथा कुछ अफगान सेना को लेकर दिल्ली की ओर कूच कर दिया। विद्रोही और मुगल समर्थक सरदारों को रौंदता हुआ वह इटावा पहुंचा और थोड़ी ही लड़ाई के बाद वहां के शासक कियार खां

ने हथियार डाल दिए । यहां से हेमू कालपी तथा आगरा पहुंचा। वहां के सरदार क्रमशः अब्दुल्ला खां उज्बेग और सिकंदर खां उज्बेग बिना लड़े ही दिल्ली भाग गये और मुगल सेनापति तारदी बेग से मिल गए । ५ अक्तूबर, १५५६ को हेमू ने आगरा से दिल्ली की ओर कूच किया तथा दिल्ली से १२ किलोमीटर दूर तुगलकाबाद किले के पास डेरा डाल दिया । यहां पर सम्भल से शादी खां तथा अलवर से हाजी खां भी हेमू से आ मिले । अब मुगलों के लिए युद्ध के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा ।

अतः ६ अक्तूबर, १५५६ को मुगल सेनापति तारदी बेग तथा अफगान सेनापति हेमचन्द्र भार्गव के बीच युद्ध आरंभ हुआ। पहले आक्रमण करते हुए मुगल सरदार इस्कदर खां ने हेमू की सेना के दाएं पक्ष पर पूरी ताकत के साथ जोरदार आक्रमण कर दिया । शुरू में ही हेमूपक्ष का सरदार राय हुसैन जिलवानी मारा गया और मुगल सेना हावी होने लगी । हेमू के आदेशसे अलवर के सरदार हाजी खां ने मुगल सेनापति तारदी बेग पर सीधा आक्रमण कर दिया । वह सीधे हमले को सह न सका और मैदान छोड़कर भागने लगा। इसे देखकर मुगल सेना में भगदड़ मच गई । जिसको जहां रास्ता मिला उधर ही भाग खड़ा हुआ । इस प्रकार चंगेज खाँ के वंशज महान मुगलों की सेना दो घण्टे भी युद्ध न कर सकी और अपना बहुत सा धन, १६० हाथी, १००० अरबी घोड़े और युद्ध का सामान छोड़कर भाग गई ।

यह हेमू की सबसे बड़ी विजय थी । इस स्थान पर हेमू के सोचने का ढंग बदल गया । उसने सोचा समस्त अफगान सेना तथा सरदार उसके साथ थे । आदिलशाह एक निर्बल, व्यसनी और अयोग्य व्यक्ति था । उसके अहंकारी स्वभाव के कारण अफगान सरदार खुश नहीं थे । वह बहुत दूर भी था और बिना सेना के कुछ भी नहीं कर सकता था । हेमू ने युद्ध में प्राप्त लूट का बेशुमार धन सैनिकों और सरदारों में बांट दिया । इसके बाद उसने साथियों के साथ परामर्श कर स्वयं को दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया और शाही छत्र के नीचे हाथी पर सवार हेमू ने विजयी सम्राट हेमचन्द्र के रूप में पाण्डवों द्वारा निर्मित पुराने किले में प्रवेश किया । अठारहवीं शताब्दी की पुस्तक इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध जिसमें महाराज

युधिष्ठिर से लेकर मुगलों तक दिल्ली में राज्य करने वाले राजाओं की सूची दी गई है, के अनुसर हेमू ने पांच मास और सात दिन दिल्ली में राज्य किया ।

ढूसर जाति वणिक् हेमू नामश्च राज्यकृत् ।
पंच मास दिन सप्त योगिनीपुर मध्यगः ।।

इंद्रप्रस्थप्रबंध, अ० ११ श्लोक २)

वस्तुतः हेमू ने बंगाल से मुगलों और उनके प्रान्तीय सरदारों के विरुद्ध युद्ध अभियान आरम्भ करते ही स्वयं को दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया था । दूसरे दिन आश्विन कृष्ण षष्टि, संवत् १६१३ विक्रमी तदनुसार ७ अक्तूबर, १५५६ ईस्वी को अनेकों राजपूत सामन्तों, अफगान सरदारों, विद्वान ब्राह्मणों एवं नगर के गणमान्य प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हेमचन्द्र का राज्याभिषेक किया गया। उसने राजदण्ड और छत्र धारण कर प्राचीन भारतीय सम्राटों द्वारा धारण की जाने वाली विक्रमादित्य की उपाधि धारण की । दक्षिणापथेश्वर चालुक्य सम्राटों के लगभग एक हजार वर्ष के बाद किसी भारतीय राजा ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी । १००० से १५५६ ईस्वी तक साढ़े पांच सौ वर्षों के उपरान्त भारतीय प्रजा को धार्मिक उत्पीड़न, मंदिरों और संस्कृति के विध्वंस, मानसिक एवं शारीरिक अत्याचार तथा आर्थिक शोषण से मुक्ति की आस बंधी ।

राज्याभिषेक के बाद सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य ने ब्राह्मणों को उपहार, पट्टवस्त्र आदि भेंट किए । अपने निकट सरदारों को विभिन्न पदों पर नियुक्त किया । अपने भाई जुझारू राय को अजमेर का सामन्त तथा भतीजे रामराय को सेनापति नियुक्त किया । उसने शेरशाह की मृत्यु के बाद फैली प्रशासनिक अव्यवस्था को समाप्त कर साम्राज्य के प्रशासन को सुव्यवस्थित किया । साम्राज्य की दशा को सुधारने के लिए प्रशासनिक, सैनिक, न्यायिक तथा राजनैतिक निर्णय लेकर उन्हें कार्यान्वित करने के लिए हेमचन्द्र के पास बहुत ही कम समय था और उसने अपनी पूरी चतुराई तथापि योग्यता के साथ उसे कार्यान्वित किया । इसी समय पंजाब में स्थित अकबर, सेनापति बैरम खां के नेतृत्व में दिल्ली सिंहासन हस्तगत करने के प्रयास में था । हेमचन्द्र ने अकबर से सम्भावित युद्ध को रोकने के

लिए शीघ्रतापूर्वक सेना को व्यवस्थित किया तथा अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित करके तैयार किया। तोपखाने का संवर्द्धन किया।

शीघ्र ही सम्भावित संघर्ष का समय आ पहुंचा और नवंबर, १५५६ में अकबर ने सेनासहित कलानौर से चलकर थानेसर में डेरा डालदिया। उसने अली कुली खां के नेतृत्व में दस हजार घुड़सवारों का दल हेमू की ताकत का जायजा लेने के लिए भेज दिया। हेमू ने भी दिल्ली से चलकर पानीपत में शिविर लगा दिया। उसने अकबर की बढ़त को रोकने के लिए मुबारक खां और बहादुर खां के नेतृत्व में तोपखाना थानेश्वर की ओर रवाना कर दिया। उसकी यह बड़ी भूल हार का कारण बनी। अली कुली खां ने हेमू के तोपखाने पर आक्रमण कर कब्जे में कर लिया। संभवत: अली कुली खां मुबारक खां और बहादुर खां को इस्लाम की दुहाई देकर उसने अपनी ओर मिला लिया था। शीघ्र ही ५ नवंबर, १५५६ ईस्वी का दिन आ पहुंचा जब विश्वप्रसिद्ध पानीपत के मैदान में उत्तरापथेश्वर हेमचन्द्र विक्रमादित्य और बैरम खां के सेनापतित्व में चंगेच खां के वंशज अकबर की सेनाएं आमने-सामने थीं। हेमू ने अपनी एक लाख सेना को तीन भागों में बांटा। वामभाग का नेतृत्व सादीखां एवं दाएं भाग का नेतृत्व उसका भतीजा रामराय तथा बीच में हेमू अपने प्रसिद्ध हाथी हवाई पर सवार होकर युद्ध का संचालन कर रहा था। युद्ध का आरंभ करते हुए हेमू ने मुगलसेना के बाएं भाग पर जोरदार आक्रमण कर उसके छक्के छुड़ा दिए। थोड़ी ही देर में बैरम खां ने नाले की ओर से आक्रमण कर दिया। भीषण युद्ध आरंभ हो गया। लड़ाई के प्रथम चरण में ही हेमू के भतीजे रामराय, दूसरे सरदार सादीखां, सरदार भगवान दास वीरगति को प्राप्त हो गये। मुगलसेना और हेमू के बीच में नाला था जिसे हाथी पार नहीं कर सकते थे। पीछे से अली कुली खां ने आक्रमण कर दिया। हेमू मुगल सेना से घिर गये किन्तु वीरतापूर्वक लड़ते रहे और दोनों ओर से आने वाली मुगलसेना का सामना करते रहे।

किन्तु दो अनुभवी, वीर और महान सेनापतियों वाली सेनाओं के बीच लड़े गए इस भयंकर युद्ध का निर्णय संयोग से एक तीर ने कर दिया जोकि हेमू की आंख में घुसा और पीछे की ओर पार निकल गया। हेमू एक बार बैठ गया किन्तु शीघ्र ही संभल गया

और आंख पर कपड़ा बांधकर फिर से तुमुल युद्ध करने लगा। उसकी वीरता, साहस और जुनूनी युद्धशैली से मुगलसेना हतप्रभ रह गई। किन्तु शीघ्र ही अधिक रक्त बह जाने से वह बेहोश हो गया। महावत ने जंगल की ओर भागने का प्रयास कर उसे बचाने की कोशिश की किन्तु मुगल सेनाओं ने घेरकर उसे भी मार डाला। बेहोश हेमू को अकबर के सामने लाया गया। अकबर ने उसके अचेतन शरीर के शिर को काटकर गाज़ी की उपाधि प्राप्त की और इस्लाम की विजय के उपलक्ष्य में युद्ध में कटे सिरों को इकट्ठे कर मिनार बनाकर जश्न मनाया गया। लगभग छः सौ सालों बाद हिन्दू समाज को उत्पीड़न, अपमान और अत्याचार से मुक्ति दिलाने वाले दीपक की छोटी सी लौ भभक कर बुझ गई।

अकबर ने दिल्ली में प्रवेश कर अपने आप को भारत सम्राट घोषित कर दिया। हेमू को मारकर मुगलों को संतोष नहीं हुआ। उसने हेमू के निकट संबंधियों को पकड़ने के लिए सेना की एक टुकड़ी भेज दी। हेमू की विधवा पत्नी बैजवाड़ा जिला फिरोजपुर, पंजाब के जंगलों में छिप गई और मुगलसेना के हाथ कभी नहीं आई। उसके अस्सी वर्षीय पिता राय पूर्णदास को इस्लाम ग्रहण करने के लिए कहा गया। उसने कहा "जिस धर्म और आस्था में मैं जन्मा, पला, बढ़ा, समृद्धि प्राप्त की, अस्सी साल जीया उसे केवल भय के कारण त्याग देना महापाप है।" धर्मपरिर्तन से इन्कार करने पर उसका सर धड़ से अलग कर दिया गया। हेमू के अन्य वंशजों और संबंधियों तथा निकट सरदारों को पकड़कर दिल्ली और आगरा की जेलों में डाल दिया गया। कुछ समय बाद अकबर के मंत्रियों बीरबल, टोडरमल तथा राजपूत सरदारों की सलाह से उन्हें मुक्त कर दिया गया।

स्वराज्य प्राप्त कर प्रत्येक देश और जाति में अपने हुतात्माओं, स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों का इतिहास लिखा जाता है। उनके जन्मस्थान, मृत्युस्थान तथा अन्य संबंधित स्थानों का विकास कर शहादत और स्वतंत्रता के महत्व को याद किया जाता है। किन्तु भारतीय राज्य एवं समाज ने विदेशियों के विरुद्ध लड़ने वाले प्रथम स्वतंत्रता सेनानी, बाईस युद्धों के विजेता, लगभग समस्त भारत के सम्राट, विदेशी आक्रमणकारियों से लड़कर देश की आजादी के

रक्षक, सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य को नगण्य समझकर भुला दिया उसे इतिहास की पुस्तकों में दस पंक्तियों में निपटा दिया गया। विदेशी, अत्याचारी और साम्प्रदायिक सम्राटों की प्रशंसा में अनेकों पुस्तकें लिखी गईं। आक्रमणकारी मुगलों के पूरे वंश तथा उसके विरोधी अफगान शेरशाह के नाम पर राजधानी दिल्ली में मार्गों का नामकरण किया गया। हेमू को छोड़ दिया गया। क्या इसलिये कि वह स्वदेशी राजा था ? यही नहीं उसके वंश को मिटाने का प्रयास किया गया और उसे बक्काल यानि छोटा-मोटा बनिया कहा गया। १८५७ ईस्वी में अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय प्रजा द्वारा लड़े गए युद्ध को प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है। किन्तु तथ्यात्मक सत्य यह है कि विदेशी दासता के विरुद्ध प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हेमू द्वारा लड़ा गया था और स्वतंत्रता की बलिवेदी पर वही प्रथम बलिदानी था। स्वराज्य आन्दोलन की ज्वाला की चिंगारी हेमचन्द्र से आरम्भ होकर महाराणा प्रताप, ओरछा नरेश छत्रसाल, वीर शिवाजी तथा उनके उत्तराधिकारी मराठे पेशवाओं से होती हुई १८५७ तक पहुंची थी।

वस्तुतः हेमू पुष्यमित्र चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य हर्ष वर्धन, पुलकेशिन, राजेन्द्र चौल, आदि महान् विजेताओं और सेनानायकों की तरह एक कुशल योद्धा और सेनापति तथा अनेकों युद्धों का विजेता था। पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार, मिथिला, भोजपुर क्षेत्रों में हेमू की वीरता में अनेकों लोकगीत आज भी प्रचलित हैं जिनमें से एक गीत इस प्रकार है :–

''हमनीक दादा हेमू दादा, लम्बे-लम्बे बाल रे।
सिर मकुटिया हाथे धनुहिया, घोड़े पर असवार रे ॥०
मुंह में पनमा देह में अचंकन, दादा जोर से बोलै बात रे ॥२॥०
दादा के भैया नेमू दादा, मीठी-मीठी बात रे ॥३॥०
घोडा हाँकै, ऊँटवन हाँकै, सै कोस दौरान रे ॥४॥०
माथे दादा साफा बाँधे, कमर में लटकै तलवार रे ॥५॥०
मुंहमें दादा बचनों न बोलै, मोगल कै कैलक संहार रे ॥६॥०
राजा बनी फरीद भैया, दादा भेले कोतवाल रे ॥७॥०
बूढ़ा दादा मधु दादा, देल कै सनुकबा खोलि रे ॥८॥०
रुपैया बहलै पानी बहलै, दादा के मन में नहि आह रे ॥९॥०

पूरब जित लनि दादा, पच्छिम जित लनि, जितलनि सकलो जहान रे ॥१०॥०
फरीद दादा मरलै डकवा पडले, भेलहि घर-घर सोच रे ॥११॥०
पडलै इस्लाम चाचा के सिर पै ताज रे, दादा के सिर पर नाहिए मकुटिया ।
दादा जनलन समनीक सिरमौर रे ॥१२॥०
इस्लाम मरलै डाका पड़लैक, पड़लै महलवा में सेंध रे ॥१३॥०
बच्चा मारलगेलै मासूम बच्चा, शोर भेलहि सकल जहान रे ॥१४॥०
घोडा चढ़ि अयलहिं हमनीक दादा, जनकि लम्बी-लम्बी मोंछ रे॥१५॥०
''जे हमरो पोतवा कै जान लै लेलकै, तिनिका कै करव हलाल रे''॥१६॥०
अदली के होशवा गेलै भागिरे, दौड़ल आयल पगड़ी रखने हथिया रे ॥१७॥०
''अब हे चाचा माफे करिआँ, मैं गेलै कसूर महान रे'' ॥१८॥०
ओकनीक बचनियाँ सुनि दादा घबरौलहिं, हरिगेलैन हुनकहु ग्यान रे ॥१९॥०
''जाहे बेटा राजकरऽतू, केलिआँ कसूरिया माफ रे'' ॥२०॥०
दादा चढ़लै घोड़वा पर, अकबाल दौड़लै पैदल दादा पहुँचलै
दिल्ली नगरिया ओ पहुँचलै आगे ॥२१॥०
दादा भैलइ अब राजा, हिन्दुअन के सिरताज रे ॥२२॥०
मोगल भागल, शोर मचावल, दादा के सिर ताज रे, हिन्दुवान के पलटलै भाग रे ॥२३॥०
बरस दिन दादा रजवा केलकै, कुरछेत्र में भेलै लड़ाई रे ॥२४॥०
हमनीक फूटलैक भाग रे, तीर उछटि के दादा कै लगलै अँखियाँ गेलै फूटि रे ॥२५॥०
हमनीक करमवो गेलै फूटि रे । हिन्दुअन कै भगिया गेलै टूटि रे॥२६॥०
साफा लाल, देह लाल, अँखियाँ विकराल लाल ।
मोगल आयल शोर मचावल, बूढ़ा दादा कै लेलकै सिर काटि रे ॥२७॥०
'भागो-भागो' शोर मचावल, भगली हम घर छोड़ि रे ॥२८॥०
पूरब भगली, पच्छिम भगली, जंगलक लैली राह रे ॥२९॥०
हमरो दादा कै कोठा अटरिया, हमनी के घसवोकै नई घर रे ॥३०॥०
आहो दादा अब फेर कहिया अयबऽ, कहिया जूटतैक हमनीक भाग रे ॥३१॥०
कहिया फूलतैक भलसरीक गछिया कहिया देखबैक सहसराम नगरिया रे ॥३२॥०
न कोई जानै न कोई पूछै, रो-रोकै बीतबै छीरतिया ।
हम छी ओहि दादा के बिटिया, ना कोई सुने बातियो रे ॥३३॥०
जँतिया पीसि-पीसि दिनवा कटइ छिन, सुनिजा दादा मोर बतिया रे॥३४॥०
झिझिया खेलली गितिया गैलीं, पुरुखा कै लैली नाम रे ।
जे बेटखौं को किछुओ बजती, हुनका देवैन गारी रे ॥३५॥०

नेपोलियन बोनापार्ट की तरह अनेकों युद्धों के विजेता और एक ही अंतिम युद्ध हारने वाले तथा मध्यकाल में मुगलों की सत्ता को चुनौती देकर स्वराज्य के एकमात्र संस्थापक हेमचन्द्र विक्रमादित्य के सत्य और तथ्यात्मक इतिहास को लिखा जाना चाहिए। इसके लिए हमें निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना आवश्यक है :

१. क्या हेमू एक छोटा-मोटा बनिया-बक्काल था अथवा जैसा कि दावा किया जाता है वह भार्गववंशी धूसर ब्राह्मण था ?
२. क्या हरियाणा, राजस्थान के गौड़ ब्राह्मणों की तरह हेमू की वंशावली उपलब्ध है ?
३. क्या रेवाड़ी तथा मछेरी के ब्राह्मण हेमू के वंशज/कुटुम्बी होने के प्रामाणिक तथ्य प्रस्तुत कर सकते हैं ? क्या वे अपना वंशवृक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं ?
४. क्या मछेरी और रेवाड़ी में हेमू से संबंधित अवशेष या स्मारक उपलब्ध हैं ?
५. क्या हेमू द्वारा जारी किए गए सोने के सिक्के कहीं पर उपलब्ध हैं ?
६. क्या हेमू ने मुगलों के विरुद्ध राजपूताना के राजाओं से सहायता मांगी थी और क्या यह सत्य है कि उन्होंने उसे सहायता दी थी ?
७. क्या पानीपत में हेमू की रणनीति सही नहीं थी ? या मुस्लिम सरदार मजहबी पक्षपात के कारण शत्रुसेना से मिल गए थे ?

इन सब तथ्यों को इकट्ठा करके ही हेमू की प्रामाणिक जीवनी लिखी जा सकती है। विजेता मुगलों के दरबारी लेखकों और अन्य मुस्लिम लेखकों द्वारा लिखी गई बातों के आधार पर हेमू का इतिहास लिखना ऐतिहासिक संभ्रम पैदा करना है। क्या भारतीय इतिहासकार और हरियाणा सरकार हेमचन्द्र विक्रमादित्य की प्रामाणिक जीवनी लिखवाने का कार्य करेंगे ?

बजरंग लाल अत्रि

मानवता कुलम्, एच-१४/५९, हमदर्द पब्लिक स्कूल के पास,
संगम विहार, नई दिल्ली-११००६२, चलभाष : ९८६८१७०५५४
अणुप्रेष (E mail) : attreya_bdev@yahoo.com

स्व राष्ट्राय स्वाहा सर्वम्

(पं. हेमचंद्र विक्रमादित्य भार्गव वीरत्वम्)

(१५०१-१५५६ ई.)

१. रेवती क्षेत्रे

सिंधु सरस्वती युग्मम्
प्रकृति पुरुषम् तथा ।
रैवत पर्वते क्षेत्रे
नमामि क्रान्ति कारकम्॥१॥

प्रकृति एवं पुरुष के एकात्म स्वभाव के समान सिन्धु और सरस्वती नदियों के आंचल में स्थित रैवतक पर्वत क्षेत्र के क्रान्तिकारी को हम प्रणाम करते हैं ।

राय पूरण दासस्य
भार्गव वंश विप्रतः।
समुत्पन्ना महाज्योतिः
हेमचंद्रः विभूषितः॥२॥

विश्वविख्यात भृगुवंशी ब्राह्मण कुल में उत्पन्न पं० राय पूरण दास के घर में अधर्मरूपी अन्धकार में क्रान्ति और वीरता की जाज्वल्यमान ज्योति के रूप में हेमचन्द्र का जन्म हुआ ।

अलवर मछेरीतः
रेवती ग्राम प्रवासतः।
हेम् सुशिक्षितो जातः
बाल्य काले प्रशिक्षणे ॥३॥

भारतवर्ष के राजस्थान प्रान्त के अलवर जनपद में स्थित अपने जन्मस्थान मच्छारी (मत्स्यारि/ मत्स्य-हरि) ग्राम से बाल्यकाल में प्रवास कर हेमचन्द्र ने रेवती ग्राम (रेवाड़ी) में शिक्षा और युद्ध आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

संस्कृतम् प्राकृतम् सर्वम्
अरबी फारसी तथा।
चतुर्षष्टि कला ज्ञाने
हेमचंद्र प्रवीणता॥४॥

हेमचन्द्र ने देवभाषा संस्कृत, आंचलिक प्राकृत, अरबी, फारसी तथा चौंसठ कलाओं की शिक्षा प्राप्त की ।

सैन्य विज्ञान ज्ञानार्थम्
मल्ल युद्ध प्रशिक्षणम्।
ज्ञान विज्ञान व्यापारे
हेमचंद्र विशेषता॥५॥

सैन्य प्रशिक्षण, मल्लयुद्ध, ज्ञान-विज्ञान तथा व्यापार में हेमचन्द्र ने विशेषज्ञता अर्जित की ।

विप्र क्षत्रिय योगाय
मित्रता सहदेवस्य ।
स्वर्णे सुगंध संसर्गे
ज्ञान शक्तिः समन्विता ॥६॥

ज्ञान और शक्ति के समन्वय एवं सोने में सुगन्ध के समान ब्राह्मण हेमचन्द्र ने क्षत्रिय सहदेव से मित्रता की ।

मानव धर्म शास्त्रेण
मनु स्मृति प्रवर्तनम् ।
प्राचीन संविधानेन
मंदिरे दुर्ग साधना ॥७॥

हेमचन्द्र ने मंदिररूपी दुर्ग में मानव धर्मशास्त्र के ग्रन्थ, विश्व के प्रथम संविधान मनुस्मृति के क्रियान्वयन की साधना की ।

शक्तिः संघे सदा प्राप्तुम्
सप्तर्षि मित्र मण्डली ।
शैथिल्य त्याग कार्यार्थम्
शपथ गृहणम् कृतम् ॥८॥

संगठन की शक्ति प्राप्त करने के लिए हेमचन्द्र ने सप्तर्षियों की दृढ़ एकता के समान मित्र-मण्डली बनाकर आलस्य के त्याग की शपथ ग्रहण करवाई ।

सर्वत्र स्नेह पूजार्थम्
धृतम् सात्विक जीवनम् ।
अग्रतः चतुरो वेदः
पृष्ठतः शस्त्र धारणम् ॥९॥

हेमचन्द्र ने सर्वत्र मित्रता और सम्मान प्राप्ति के लिए सात्विक जीवनचर्या ग्रहण की तथा हाथों में चारों वेद एवं कन्धों पर शस्त्र धारण किए ।

हेमचंद्र उवाच

संस्कृति रक्षणम् दुर्गे
देवमंदिर साधना ।
ग्रामे ग्रामे भवेत् संघः
जनजागरणम् तथा ॥१०॥

संस्कृति की रक्षा के लिए प्रत्येक गांव के दुर्गरूपी देवमंदिरों में सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता के लिए जन-जागरण किया जाना चाहिए।



२. हिंगलाज शक्तिपीठे

मूलस्थान मुल्ताने,
भ्रन्शितम् सूर्य मंदिरम् ।
तीर्थ यात्रा प्रवासेन,
सूर्य शक्ति प्रवर्तनम् ॥११॥

हेमचन्द्र ने भगवान् सूर्य की शक्ति प्राप्त करने के लिए आततायियों द्वारा विध्वस्त मुल्तान के सूर्य-मंदिर की यात्रा की ।

मानसरोवरे तीर्थे
कैलासे शिव तीर्थतः ।
सिंधु सरस्वती धारा
शक्ति ज्ञान प्रवाहिका॥१२॥

उसने भगवान् शिव के धाम कैलाश-मानसरोवर की यात्रा की जहां से शक्ति और ज्ञान की प्रतीक सिन्धु एवं सरस्वती नदियां प्रवाहित होती हैं ।

हिंगलाजस्य यात्रार्थम्
शालिवाहन कोटतः ।
प्रेरणा प्राप्ति कार्यार्थम्
शक्तिपीठ सुदर्शनम् ॥१३॥

उसने दुष्टमर्दन की शक्ति प्राप्त करने के लिए शालिवाहन कोट (स्यालकोट)से हिंगलाज शक्तिपीठ की यात्रा आरम्भ की।

सागर तटतः दूरे
गुहा मध्ये निवासिनी ।
शक्ति प्रेरक पीठेषु
पश्चिम क्षेत्र रक्षिका ॥१४॥

पश्चिम सागर से दूर स्थित गुफा में शक्ति की प्रेरणादायक, पश्चिम भारत की संरक्षिका हिंगलाजेश्वरी देवी विराजमान है ।

हिंगलाजेश्वरी देवी
भारतवर्ष मातृका ।
संस्कृति सभ्यता योगे
ज्योतिर्लिंग प्रकाशनम् ॥१५॥

हिंगलाजेश्वरी देवी भारतवर्ष की माता है जहां संस्कृति और सभ्यता के संयोग स्वरूप ज्योतिर्लिंग प्रकाशित है ।

ईशांश सृष्टि भावेषु
सर्वत्र प्रेम दर्शनम् ।
भेदभावस्य नाशार्थम्
मूर्खता भ्रम वारणम्॥१६॥

समस्त सृष्टि में ईश्वर की विद्यमानता का भाव रखकर सर्वत्र प्रेम का दर्शन करना चाहिए तथा भेदभाव की मूर्खता का निवारण करना चाहिए ।

दुर्गा सप्तशती पाठे
महिषासुर मर्दनम ।
विजय सम्भवम् लोके
देव शक्ति समन्वये ॥१७॥

श्री दुर्गासप्शती (मार्कण्डेय पुराण) के अनुसार समस्त देवताओं की शक्ति के संघटन से उत्पन्न देवी ने महिषासुर का मर्दन किया था ।

शतद्रु सिंधु यात्रायाम्
शक्तिपीठेषु दर्शनम् ।
राक्षसातंक नाशार्थम्
हिंगलाजे अनुष्ठितम् ॥१८॥

सतलुज तथा सिंधु नदियों के तटों पर स्थित शक्तिमंदिरों के दर्शन करते हुए हेमचन्द्र ने राक्षसों के नाश के लिए हिंगलाज शक्तिपीठ में अनुष्ठान किया ।

एकत्व भावना सिद्धा
संगठनम् प्रवर्तितम् ।
नगर ग्राम वासेषु,
संस्कृति दुर्ग मंदिरे ॥१९॥

अनेकों नगरों, ग्रामों में स्थित संस्कृति रक्षा के दुर्गरूपी मंदिरों में एकता की भावना का संचार कर हेमचन्द्र ने संगठन सुदृढ़ किया ।

जनता योग संग्रामे
विजय मंत्र साधना ।
तीर्थ यात्रा फलम् प्राप्तम्
नित्य एकत्व भावना ॥२०॥

हेमू ने स्वातंत्र्य संग्राम में समस्त जनता की भागीदारी हेतु युद्धविजय के मंत्र की साधना की तथा सदा एकता की भावना रूपी तीर्थयात्रा का फल प्राप्त किया ।



३. जालंधर शक्तिपीठे

पुलोमा भृगु योगेन
भार्गव वंश चालनम् ।
भृगु आश्रम संयोगे
वसु धारा प्रवाहिता ॥२१॥

जालंधर स्थित भृगु आश्रम से पौलोमी एवं महर्षि भृगु के संयोग से वसुधारा के प्रवाह के समान भृगुवंश का आरंभ हुआ ।

भार्गव विप्र पाण्डित्ये
ज्योतिषस्य प्रकाशनम् ।
सिन्धु सरस्वती मध्ये
जालंधर पीठ मंदिरम् ॥२२॥

ज्योतिष के परमज्ञानी भार्गव वंश के निवास सिन्धु एवं सरस्वती नदियों के मध्य स्थित जालंधर शक्तिपीठ की हेमचन्द्र ने यात्रा की ।

शिव कल्याण केदारे,
ज्ञान ज्योति शिवार्चनम्।
लोकपाल सुतीर्थेन
बद्रीनाथस्य भावना ॥२३॥

हेमचन्द्र ने कल्याण एवं ज्ञान की ज्योति केदारेश्वर महादेव का अर्चन किया तथा लोकपाल तीर्थ (हेमकुण्ड साहिब) तथा बद्रीनाथ की यात्रा की ।

धर्मस्थलस्य संस्थासु
संस्कृति दुर्ग मंदिरम् ।
मानव केन्द्र निर्माणम्
ग्राम नगर जंगले ॥२४॥

उसने धर्मस्थलों को संस्कृति दुर्ग के रूप में स्थापित किया तथा गांवों, नगरों एवं जंगलों में मानवता के सेवा केंद्रों की स्थापना की ।

मनसा कर्मणा वाचा
सुख प्रदान भावना ।
मानव पशुता नष्टा
करोति शुभ कामना ॥२५॥

मन, वाणी और कर्म से समस्त प्राणियों को सुख देने वाली भावना से मानव में छिपी पशुता का नाश होकर शुभकामना का उदय होता है ।

तीर्थ भ्रमण सत्संगे
समता सत्य दर्शनम् ।

हेमचंद्रस्य कर्तृत्वम्,
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥२६॥

तीर्थयात्रा एवं सत्संगति से सत्य का दर्शन होता है हेमचन्द्र ने समस्त पृथ्वी को एक कुटुम्ब के समान बनाने की प्रेरणा दी ।

मंदिरे मंदिरे भूयात्
वेदवेदांग पाठनम् ।
समाज प्रेरणा केन्द्रम्
विद्यालय युतम् सदा ॥२७॥

राष्ट्र के समस्त मंदिरों में वेद-वेदांगों का अध्ययन होना चाहिए तथा मंदिर समाज को प्रेरणा देने के विद्यालय बनें ।

प्रकृति पूजनम् नित्यम्
ग्रामस्य देवतार्चने ।
कबीला कुल पूजासु
एकता समता यदा॥२८॥

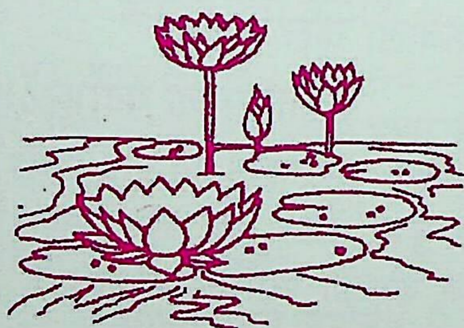
गांवों के देवताओं की पूजा प्रकृति की ही पूजा है कुल, स्थान और भिन्न-भिन्न देवताओं की पूजा एक ही परमेश्वर की पूजा है ।

मूल ग्रंथस्य भावेषु
एकत्वम् दृश्यते सदा ।
विविध मार्ग संयोगे
सुलभ मार्ग मित्रता ॥२९॥

धर्मग्रन्थों की मूल भावना सर्वत्र एकता का दर्शन है । विभिन्न प्रकार की पूजा-साधनाओं के द्वारा विविध मार्गों में एक ही सुलभ मार्ग मित्रता है ।

भार्गव परिवारेषु
परशुराम प्रेरणा ।
युद्धाय कृत संकल्पः
जने जने सु जागृता ॥३०॥

भार्गववंश की परम्परा में भगवान् परशुराम की प्रेरणा से हेमचन्द्र ने भी जन-जागरण कर आततायियों के विरूद्ध युद्ध के लिए आमजन को कृतसंकल्प किया ।



४. कामाख्या शक्तिपीठे

सुशक्ति साधना केन्द्रे,
वैद्यनाथ शिवालये ।
कामाख्या पीठ मार्गेण
सेवा संगठनम् कृतम् ॥३१॥

हेमचन्द्र ने कामाख्या शक्तिपीठ के मार्ग में पड़ने वाले शक्तिसाधना केन्द्र ज्योतिर्लिंग वैद्यनाथ शिवालय में सैनिक संगठन किया ।

म्लेच्छ बर्बरता दृष्टा,
निर्दोष वध कारिका ।
पर सम्पति लोभेन
विदेशाक्रमणम् यदा ॥३२॥

राणा संग्राम सिंहस्य,
लौहेन लौह कर्तनम् ।
विफला योजना जाता,
राजनीतिक चक्रतः ॥३३॥

मुगल और पठान विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा धन के लालच में की जाने वाली निर्दाष लोगों की बर्बरतापूर्वक हत्याओं को देखकर,

रणकेसरी महाराणा संग्राम सिंह ने "लोहे से लोहा काटा जाता है", इस कूटनीति का प्रयोग कर आततायियों को आपस में भिड़ा दिया ।

चित्र दुर्गस्य मेवाड़े,
अस्मिता रक्षणम् तदा।
स्वातंत्र्य क्रांति संग्रामे
भारतत्वम् सुरक्षितम् ॥३४॥

इसके पश्चात् अस्मिता की रक्षा के लिए स्वतंत्रता संग्राम में चित्रकोट चित्तोड़ मेवाड़ राज्य द्वारा भारतीयता की रक्षा के उपाय किए गए ।

विचार क्रान्ति यज्ञेषु
आमेर दुर्ग दीनता ।
बाधा आहुति दानेषु
शासक स्वार्थ साधनम् ॥३५॥

विचारक्रान्ति के उपरोक्त यज्ञ में आमेर शासक द्वारा स्वार्थ पूर्ति के लिए आहुति देने में बाधा डाली गई ।

उत्तर पूर्व पर्यन्तम्
सीमान्ते नव जागृतिः ।
मातृभूमि सुरक्षार्थम्
कामाख्या शक्तिसाधना॥३६॥

कामरूप क्षेत्र में भारत की पूर्वोत्तर सीमा के संरक्षण के लिए नवजागरण हेतु हेमचन्द्र ने कामाख्या शक्तिपीठ की यात्रा की ।

येन केन प्रकारेण
विदेश दस्यु नाशनम् ।
छल कपट द्वारापि
शास्त्र सम्मत साधनम् ॥३७॥

हेमचन्द्र ने छल-कपट, साम-दाम-दण्ड-भेद आदि कूटनीतियों तथा शस्त्रप्रयोग द्वारा जिस किसी भी प्रकार से विदेशी आक्रमणकारियों के नाश के लिए प्रयत्न किए ।

दस्यु दल द्वये जाते,
लाहौरे काबुले तथा ।
इन्द्रप्रस्थ रक्षार्थम्
शेरशाह समर्थनम् ॥३८॥

आक्रमणकारी दो दलों लाहौर और काबुल में विभक्त हो गए । इस स्थिति में हेमचन्द्र ने इन्द्रप्रस्थ की रक्षा के लिए लिए शेरशाह सूरी का समर्थन किया ।

चतुर्षष्ठ चतुर्द्वये
कलियुगस्य संवते ।

पाण्डव दुर्ग सम्प्राप्तिः
मुगलस्य पराजये ॥३९॥

कलियुग संवत् ४६४२ में शेरशाह ने मुगलों को हराकर इन्द्रप्रस्थ का पाण्डवनिर्मित दुर्ग (पुराना किला) हस्तगत कर लिया ।

पंचमुखी (युधिष्ठिर) सभा प्राप्ता,
कुन्ती मंदिर पूजनम् ।
प्रतिष्ठान पठानानाम्,
कृष्ण वंशज चेतना॥४०॥

पाण्डवों की सभा और माता कुन्ती के मंदिर को प्राप्तकर प्रतिष्ठान (चन्द्रवंश की राजधानी) के मूल निवासी पठानों को अपने श्रीकृष्ण के वंश चंद्रवंशी होने का अनुभव हुआ ।



५. इंद्रप्रस्थ दुर्गे

महाभारत दुर्गस्थे
मानव एकता कथा ।
पाण्डव कोट निर्माणे
प्रचालिता गृहे गृहे ॥४१॥

महाभारतकालीन पाण्डवनिर्मित दुर्ग के जीर्णोद्धार करने पर इन्द्रप्रस्थ नगर के घर-घर में मानव एकता की चर्चा होने लगी ।

सुशान्ति स्थापना जाता,
मुगल-आतंक नाशने ।
पठान शेर-शाहस्य
जनता सुख चिन्तने ॥४२॥

मुगलों के आतंक से मुक्त कर शेरशाह पठान ने सर्वत्र शांति की स्थापना की तथा प्रजा के सुखवर्धन के उपाय किए ।

इन्द्रप्रस्थस्य व्यापारी
इन्द्रप्रस्थस्य शासने ।
सहयोगी तदा जाता
भारत राष्ट्र रक्षणे ॥४३॥

इन्द्रप्रस्थ का व्यापारी वर्ग राष्ट्रीय रक्षा के लिए प्रशासन का सहयोग करने लगा ।

पित्तल तोप निर्माणम्
रेवाड़ी नगरे कृतम् ।
ताम्र पित्तल शालायाम्
परशुराम सादृशम् ॥४४॥

शस्त्रधारी भार्गव परशुराम के समान भार्गव हेमचन्द्र ने भी रेवाड़ी नगर में पीतल-ताम्र धातु-शालाओं में पीतल की तोपों तथा अन्य शस्त्रों का निर्माण करवाया ।

पण्डित हेम चंद्रेण
योग माया सुपूजनम्।
शासन सहयोगेन
कारितम् शास्त्र सम्मतम् ॥४५॥

रेवाड़ी नगर के पं० हेमचन्द्र ने कुलदेवी योगमाया की आराधना करते हुए शास्त्रसम्मत विधि से सम्पन्न कराई ।

मानवता विधानेन
भैरव पूजनम् कृतम् ।
जीर्णोद्धारेण निर्माणम्
मंदिर मस्जिदम् द्वयम् ॥४६॥

उसने मानवता विधानानुसार भैरवमंदिर में पूजन किया तथा मंदिरों एवं मस्जिदों का निर्माण करवाया ।

रूदाभिषेक धर्मार्थम्
गौरी शंकर मंदिरम् ।
जनता योगदानेन
इन्द्रप्रस्थम् सुसज्जितम् ।।४७।।

उसने प्रजाजनों के साथ मिलकर सुसज्जित इन्द्रप्रस्थ नगर स्थित गौरीशंकर मंदिर में रूद्राभिषेक करवाया।

आतंकी विजितः जाते
पलायितः तु काबुलम् ।
कूट नीति जयः जाते
हेमचंद्रस्य विक्रमे ।।४८।।

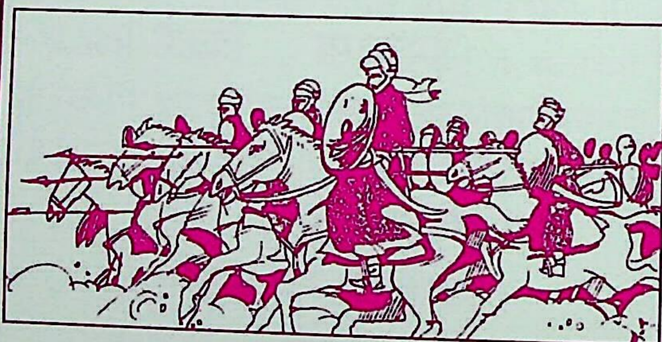
हेमचंद्र द्वारा प्रयुक्त कूटनीति एवं पराक्रम के कारण आततायी काबुल की ओर पलायन कर गए।

सुख समृद्धि सम्पन्न
पश्चिम पूर्व पर्यन्तम् ।
राजमार्गस्य निर्माणम्
सिन्धुतः गंगा सागरम्।।४९।।

उसने जनता और व्यापार की सुख-समृद्धि के लिए गंगासागर से सिन्धुनदी तक राजमार्ग का निर्माण कार्य करवाया ।

सैन्य बल मूलत्वेन
हेमचंद्र विवेकतः ।
शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे
धर्मचर्चा प्रवर्तिता ॥५०॥

हेमचन्द्र के विवेकपूर्ण कार्यों तथा राष्ट्र के सुसंगठित सैन्यबल द्वारा रक्षित होने पर देश में सभी जगह धर्मचर्चा होने लगी ।



६. महालक्ष्मी शक्ति पीठे

धर्म कर्तब्य पर्याये
अर्थः धर्म फलम् सदा।
धर्म कर्म श्रमः जाते
धन प्राप्तिः सुनिश्चिता ॥५१॥

धर्मानुरागी जीवनचर्या अपनाकर, धर्मानुसार कर्म करते हुए परिश्रमपूर्वक धनार्जन करने से धर्म और अर्थ पुरूषार्थों के फल की प्राप्ति सुनिश्चित है ।

धन सदुपयोगेन
पार्वती शक्ति प्राप्तितः।
शास्त्र शस्त्र सुयोगेन
कर्तुम् शक्यम् असम्भवम् ॥५२॥

धन के सदुपयोग के द्वारा युद्ध की देवी दुर्गा की शक्ति की प्राप्ति होती है । शस्त्र और शास्त्र के संयोग से असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है ।

कोल्हापुरे महालक्ष्मी
दीपावलि सुपर्वणि ।
व्यापार संघ संयुक्त
दिव्यानुष्ठानपूजनम् ॥५३॥

दीपावली के पावन पर्व पर कोल्हापुर के व्यापार संघ के साथ मिलकर हेमचंद्र ने दिव्य महालक्ष्मी अनुष्ठान सम्पन्न किया।

शेरशाहस्य शस्त्रेषु
भारत शास्त्र योगतः ।
हेमचंद्रस्य नेतृत्वे
व्यापार शक्ति साधनम् ॥५४॥

शेरशाह के शस्त्र, भारतीय शास्त्रों के संयोग से हेमचंद्र के नेतृत्व में व्यापार शक्ति का साधन किया गया ।

धार्मिक शान्ति योगेन
विशाल सैन्य साधना ।
सर्वेषाम् योगदानेन
एकत्वम् जय कारकम्॥५५॥

धर्म और शांति के संयोग से विशाल सेना एकत्र की गई जिसमें सबके योगदान से एकता की जय-जयकार हुई ।

विजय नगरे यात्रा
किष्किन्धा तीर्थ साधना ।
रामेश्वरम् धनुष्कोटिः
आंतक नाश प्रेरणा ॥५६॥

विजयनगर, किष्किन्धा, रामेश्वरम् एवं धनुष्कोटि आदि व्यापारिक नगरों, तीर्थों की यात्रा करते हुए हेमचंद्र ने आतंक के विरूद्ध अभियान चलाया ।

व्यापारी धर्म यात्रायाम्,
समन्वयः प्रवर्तितः ।
मंदिर गुरूद्वारातः,
एकता सूत्र वर्धनम् ॥५७॥

व्यापारिक हित और धर्मयात्राओं का समन्वय किया गया तथा मंदिर एवं गुरू आश्रमों को एक सूत्र में संगठित किया गया ।

राम कृष्ण कथा द्वारा
आंतक नाश चेतना ।
स्वदेश हित रक्षार्थम्
नित्य सत्संग साधना ॥५८॥

प्रतिदिन होने वाले सत्संगों में भगवान राम एवं श्री कृष्ण के प्रेरणादायी चरित्रों के द्वारा स्वदेश की रक्षा तथा आतंकनाश के लिए चेतना जागृत की जाने लगी ।

स्वागते दिव्य तत्वानाम्,
कृतम् सर्वम् सुसज्जितम् ।
ईश पुत्राः वयम् सर्वे
मानवता प्रचारिता ॥५९॥

दिव्य मान्यताओं को प्रतिष्ठापित किया गया तथा सभी एक ईश्वर की सन्तान हैं इस मानवता मंत्र का प्रचार-प्रसार किया गया ।

विद्रोह शक्ति कार्येषु
कंटकं कटकेन हि ।
हरितम् भरितम् सर्वम्
यदा जातम् सुशासनम् ॥६०॥

विद्रोहों के दमन के लिए कांटे से कांटा निकाला जाता है- इस चाणक्यनीति का प्रयोग किया गया । सर्वत्र सुशासन स्थापित होने पर पूरे देश में हरियाली और समृद्धि छा गई ।

७. सप्त सैन्धवे

सिंधु नदी कृता सीमा
सिन्धु स्थानस्य सर्वदा ।
हिन्दुस्थानम् सुजीवनम्
विश्व संस्कृति सभ्यता ॥६१॥

विश्व संस्कृति एवं सभ्यता के मूल-स्थान, हिन्दुस्थान सिन्धुस्थान की पश्चिमी सीमा पुनः सिन्धु नदी निर्धारित हुई ।

पंच नद प्रवाहेषु
एक मानव सभ्यता ।
सिंधु गंगा प्रभावेण
उन्नत राष्ट्र भारतम् ॥६२॥

पांच नदियों के प्रवाह वाले पंचनद क्षेत्र से मान सभ्यता का विकास हुआ । सिन्धु एवं गंगा जैसी देवनदियों के प्रभाव से भारतीय राष्ट्र का उत्कर्ष हुआ ।

सिंधु सरस्वती मध्ये
वेदध्वनिः प्रवाहिता ।

सदा विलसिता यत्र,

पृथ्वी ग्रहस्य संस्कृतिः ॥६३॥

सिन्धु एवं सरस्वती के मध्य क्षेत्र में वेदों की ऋचाएं गुंजायमान हुईं तथा यहां पर पृथ्वी ग्रह की संस्कृति विकसित हुई ।

गोल पृथ्वी स्वरूपेण

पृथ्वीश्वरस्य पूजनम् ।

विश्वनाथ जगन्नाथ

एकत्वम् प्रति पादनम् ॥६४॥

पृथ्वी के दीर्घवृत्ताकार स्वरूप के समान आकार के भगवान शिव के शिवलिंग तथा भगवान विष्णु के शालिग्राम का पूजन करके शैव तथा वैष्णव दर्शनों की एकता प्रतिस्थपित की गई ।

पण्डित हेमचंद्रस्य

एवम् शास्त्र प्रवाचनम् ।

उत्साह प्रेरकम् सर्वम्

प्रसिद्धम् लोकजीवने ॥६५॥

पण्डित हेमचंद्र के उपर्युक्त शास्त्रीय प्रवचनों ने लोकजीवन में उत्साह तथा प्रेरणा का संचार किया ।

शेर शाहस्य पुत्रस्य
निजी सहायकः तदा ।
सतत बुद्धि नैपुण्ये
हेमचंद्रः नियोजितः ॥६६॥

उनकी कुशलबुद्धि की परीक्षा करके ही शेरशाह की मृत्योपरांत उसके पुत्र सलीमशाह ने हेमचंद्र को अपना निजी सचिव नियुक्त किया ।

सतत लाभ दानेन
विश्वास वर्धनम् यदा ।
चर विभाग प्रामुख्यम्
हेमचंद्राय अर्जितम् ॥६७॥

इस प्रकार हेमचंद्र की निष्ठा, पुरूषार्थ एवं विश्वसनीयता को देखकर सलीमशाह ने उन्हें गुप्तचर विभाग का प्रमुख बना दिया ।

शेरशाह गते स्वर्गे
मुगलातंक विरोधनम् ।
सतत प्रक्रिया जाता
हेमचंद्रस्य साधना ॥६८॥

शेरशाह की मृत्योपरान्त उसके अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण हेमचन्द्र ने ही मुगलों के आतंक का सामना किया तथा उन्हें हराया ।

प्रधानमंत्रित्व दायित्वे
हेमचंद्रस्य शासने ।
आगरा इन्द्रप्रस्थम् च
मुगल शासनात् हृतम् ॥६९॥

आदिलशाह सूरी ने उन्हें प्रधानमन्त्री एवं महासेनापति नियुक्त किया । हेमचन्द्र ने न केवल सुदृढ़ शासन व्यवस्था स्थापित की बल्कि आगरा एवं दिल्ली से मुगलों को मार भगाया ।

वर्षम् पंचदशम् जाते,
मुगलांतक वर्धने ।
सुचालितम् महायुद्धम्
आंतक नाश दृष्टितः॥७०॥

इस प्रकार हेमचन्द्र ने १५ वर्षों तक मुगलों के आतंक के दमन के लिए युद्ध किए तथा अन्ततः विजयश्री प्राप्त की ।



८. स्वाधीनता संग्रामे

श्री कृष्णस्य कुले जातः
गजनी कोट निर्माता ।
गजः मालव राज्यस्य,
प्रतिष्ठानस्य पैठनः ॥७१॥

भगवान श्रीकृष्ण के वंशज गजनी दुर्ग के निर्माता मालवराज गज को प्रतिष्ठानमूल होने के कारण पैठन या पठान कहा गया है।

शालिवाहन कोटस्य
निर्माता शालिवाहनः ।
तस्य पुत्रः सुवीरत्वे
गांधार देश शासकः ॥७२॥

शालिवाहन कोट के निर्माता शालिवाहन पुत्र अपनी बहादुरी से गांधार देश के शासक बने।

तस्य पुत्रः तु बालन्दः
बुद्ध पूजा प्रवर्तकः ।
स्नेहसाम्राज्य विस्तारे
मंगोलिया सुशासकः॥७३॥

उनके पुत्र बालन्द भगवान बुद्ध के उपासक थे और स्नेह साम्राज्य का प्रचार करते हुए मंगोलियादेश के शासक हुए ।

पठान पैठनम् जातम्
खानि खानः सु कथ्यते ।
आत्म विस्मृति मूर्खत्वे
भारतत्वम् हि विस्मृतम् ॥७४॥

उपरोक्त "पैठन" ही बाद में "पठान" हो गए, "खानि" ही बाद में "खान" कहलाए । इस भारतीयमूल की आत्मविस्मृति के कारण ही मूर्खतापूर्वक वे अपने को अलग मानने लगे ।

मंगोलः मुगलः जातः
शब्देषु परिवर्तनम् ।
व्यक्तिवादस्य पूजायाम्
राष्ट्र गौरव विस्मृतम् ॥७५॥

मंगोल शब्द परिवर्तित होकर मुगल हो गया। इस प्रकार व्यक्तिपूजा के कारण राष्ट्र गौरव को भुला दिया गया ।

सेना सम्बोधने व्यक्तम्
यथार्थ इतिहासतः ।

पण्डित हेमचंद्रस्य
क्रांति गाथा प्रवर्तिता ॥७६॥

इन ऐतिहासिक तथ्यों के साथ हेमचन्द्र ने अपनी सेना को बार-बार सम्बोधित किया तथा इस प्रकार राष्ट्रप्रेम के जागरण से क्रांति का सूत्रपात किया ।

सज्जन संघ निर्माणम्
दुर्जन शक्ति वारणम् ।
संघ शक्तिः सदा ध्येया
विश्व धर्मः सनातनः ॥७७॥

सज्जनों के संगठनों के निर्माण के लिए, दुर्जनों की शक्ति को तोड़ने के लिए संगठन में ही शक्ति न्यस्त है यह विश्व का सनातन नियम है ।

संकीर्णता विचारेषु
देश द्रोहस्य भावना ।
जागृता छुद्रता द्वारा
ईर्ष्या द्वेष कुभावना ॥७८॥

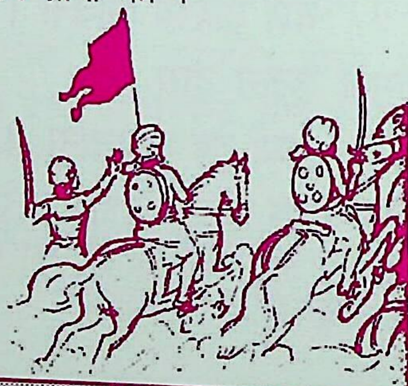
संकीर्ण एवं एकांगी विचारों से देशद्रोह की भावना आती है तथा ईर्ष्या एवं द्वेष की कुभावनाएं उत्पन्न होती हैं ।

शठे शाठ्यम् समाचरेत्
बलात् नष्टम् प्रदूषणम् ।
चाणक्य नीति योगेन
सर्वम् राज्यम् नियंत्रितम् ॥७९॥

धूर्त्त के साथ छल-कपट का प्रयोग करना तथा मानसिक संकीर्णता का बलपूर्वक दमन करना - इस चाणक्यनीति के द्वारा हेमचन्द्र ने राज्यशासन को नियंत्रित किया ।

बिहारतः समागत्य
आगरा विजयः कृतः ।
इटावा कालपी क्षेत्रम्
बयानापि जितम् तदा ॥८०॥

हेमचन्द्र ने बिहार से आरम्भ कर इटावा, कालपी, आगरा, बयाना आदि समस्त क्षेत्रों पर पुनः विजय प्राप्त की ।



९. विदेशातंक नाशार्थम्

इन्द्रप्रस्थ विजयार्थम्
नवाभियान चालनम् ।
दस्यु दल धनम् प्राप्तुम्
उत्साह वर्धनम् कृतम ॥८१॥

हेमचन्द्र ने इन्द्रप्रस्थ विजय के लिए अभियान आरंभ किया तथा सैनिकों को दस्युदल के धन को अपहृत करने के लिए उत्साहवर्धन किया ।

कथम् जायज हत्यास्ति
जनता धन लूटनम् ।
भवनादधिकम् मूल्यम्
मानव प्राण रक्षणम्॥८२॥

हत्याएं एवं प्रजा के धन को लूटने वाले कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं ? भवनों से अधिक मूल्य मानवप्राणों की रक्षा करना है ।

त्रिशतम् गज सेनातः
चयनिताश्व सैनिकैः।
इन्द्रप्रस्थ जयः जातः
हेमचंद्रस्य कर्मणा ॥८३॥

(दिनांक ६.१०.१५५६ ई.)

हेमचन्द्र ने अपने पराक्रम के द्वारा तीन सौ की संख्या में हस्तिसेना, अश्वसेना एवं पदातियों के द्वारा आक्रमण कर आश्विन कृष्ण षष्टि संवत् १६१३ विक्रमी तदनुसार दिनांक ६ अक्तूबर, १५५६ को इन्द्रप्रस्थ पर विजय प्राप्त की ।

पाण्डव कोट मंदिरे
द्वापर युग दर्शनम् ।
सम्राट हेमचंद्रस्य
अभिषेकः कृतः तदा ॥८४॥

आश्विन कृष्ण सप्तमी संवत् १६१३ विक्रमी तदनुसार दिनांक ७ अक्तूबर, १५५६ को द्वापर युग में पाण्डवों द्वारा निर्मित इन्द्रप्रस्थ के दुर्ग आधुनिक पुराने किले में हेमचन्द्र का भारत सम्राट् के रूप में राज्याभिषेक किया गया ।

विक्रमादित्य साम्राज्ये
हेमचंद्रः विराजते ।
विदेश शासनम् नष्टम्
विक्रमादित्य शासने ॥८५॥

इस प्रकार विदेशी शासन को समाप्त कर हेमचन्द्र ने विक्रंमादित्य की उपाधि धारण कर अपना साम्राज्य स्थापित किया ।

राजस्थान सुराज्यानाम्
योगदानेन संभवम् ।
सम्पूर्ण भारते वर्षे
भारत राष्ट्र शासनम् ॥८६॥

उसने विचार किया कि राजपूताना के राज्यों के सहयोग से सम्पूर्ण भारत में स्वदेशी शासन की स्थापना की जानी चाहिए ।

धार्मिक भेद भावेन
कट्टरता बलेन च ।
प्रथकत्व प्रचारेण जातम्
सैन्य विभाजनम् ॥८७॥

किन्तु धार्मिक भेदभाव तथा साम्प्रदायिक कट्टरता के द्वारा प्रथकता की भावना के प्रचार के कारण उसकी सेना में विभाजन होना आरम्भ हो गया ।

हेमु विक्रमादित्य उवाच

अहिंसा शुद्धता युक्त
भारत राष्ट्र संस्कृतिः ।
मित्रता सर्वजीवेषु
वर्तते मनु शासनम् ॥८८॥

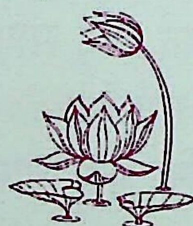
मनुस्मृति के अनुशासन के अनुसार सभी जीवों में परस्पर मित्रता की भावना तथा अहिंसा एवं पवित्रता की नीति भारतीय संस्कृति के मूलस्तम्भ हैं ।

विदेशांतक नाशार्थम्
सर्वे सन्तु सुतत्पराः ।
स्वदेश भक्ति धारायाम्
स्वदेश विजयः भवेत्॥८९॥

विदेशियों के आतंक के नाश के लिए सभी तत्पर होकर देशभक्ति की भावना को धारण कर विजय प्राप्त कर सकते हैं ।

सर्वम् स्वाहा स्व राष्ट्राय
आवाहनम् कृतम् मया ।
इदम् न मम भावेषु
राष्ट्र भक्ति प्रवर्तनम्॥९०॥

इस प्रकार हेमचन्द्र द्वारा राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पण का आह्वान किया गया । "इदम् न मम" अर्थात् "यह केवल मेरा ही नहीं है" इस भावना से राष्ट्रभक्ति का विकास होता है ।



१०. स्वातंत्र्य समर सेनानी

(दिनांके ५.११.१५५६)

द्वाविंशति स्थले युद्धे
शत्रुसेना पराजिता ।
भारत विक्रमादित्यः
हेमचंद्रः सुशोभितः ॥९१॥

बाईस युद्धों में शत्रुसेनाओं को पराजीत कर हेमचन्द्र भार्गव विक्रमादित्य के रूप में विराजित हुए।

सेवा समाप्ति दण्डेन
विश्वासघात कारकाः।
कट्टरवाद धर्मेण
गुप्त रूपेण सज्जिताः॥९२॥

विश्वासघातियों की सेवाएं समाप्त कर देने से साम्प्रदायिक विधर्मियों ने गुप्त रूप से षड्यंत्र आरंभ कर दिए ।

भ्रातृज रम्मैया कृतः
सेनापतिः स्वदेशस्य ।
राय जुझारू जातः
अजमेरस्य शासकः॥९३॥

हेमचन्द्र ने अपने भतीजे रमैया को सेनापति नियुक्त किया तथा जुझारू सिंह को अजमेर का शासक बना दिया ।

सेनापति सुरक्षायाम्
रक्षा पंक्तिः पलायिता ।
भ्रातृज प्राण रक्षार्थम्
हेमू अग्रे समागतः ॥९४॥

अकबर के साथ हुए युद्ध में सेनापति की सुरक्षा के लिए नियुक्त रक्षा पंक्ति रणभूमि छोड़कर भाग गई । तब हेमचन्द्र अपने भतीजे एवं सेनापति की प्राणरक्षा हेतु आगे आए ।

पंथ कट्टरता मध्ये
सैनिक षडयंत्रतः ।
आघातः नयने जातः
हेमचंद्रस्तु मूर्छितः ॥९५॥

साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण हेमचन्द्र की सेना के पठानों की सेना शत्रु की ओर मिल गई जिससे अकेले युद्ध करते हुए हेमू की आंख में एक तीर घुस गया ।

स्व सैनिकस्य घातेन
हेमचंद्रः पराजितः।

भारत भाग्य सूर्यास्ते
दिल्ली दीपः निवापितः॥९६॥

अपने ही विधर्मी सैनिकों के घात से षड्यंत्रपूर्वक हेमचन्द्र युद्ध में पराजित हो गए जिससे भारतीय राष्ट्र के भाग्य का सूर्य अस्त हो गया, दिल्लीरूपी मंदिर का दीपक बुझ गया।

स्वातंत्र्य युद्ध सेनानी
क्रियते अभिनंदनम्।
राष्ट्राराधन संग्रामे
अर्पितम् राष्ट्र पूजनम्॥९७॥

भारत की प्रजा उस स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी का अभिनन्दन करती है, जिसने राष्ट्ररक्षा के लिए युद्ध में सर्वस्व समर्पित कर दिया।

स्वातंत्र्य यज्ञ रक्षार्थम्
आहुति दान पालनम्।
भारत राष्ट्र सेवार्थम्
यज्ञाहुति परम्परा॥९८॥

स्वातंत्र्य यज्ञ में अपने सर्वस्व की आहुति देकर भारतीय राष्ट्र की सेवा करने की भारतीयों की प्राचीन परम्परा है।

स्वातंत्र्य समरे ध्वस्तम्
राष्ट्र भक्तस्य जीवनम्।
राष्ट्राराधन संकल्पे
क्रियते अभिनंदनम् ॥९९॥

इस प्रकार हेमचन्द्र का जीवन राष्ट्रभक्ति एवं स्वतंत्रता समर में व्यतीत हुआ उनके इस राष्ट्राराधन संकल्प का समस्त भारतवासी अभिनन्दन करते हैं।

लोक गाथासु विख्याता,
धनधूसर धंगणः ।
भार्गव धूसरे वंशे
हेम चंद्रस्य योग्यता॥१००॥

धन-धूसर अर्थात् महालक्ष्मीपति एवं धंगण अर्थात् महावीर भृगुवंश के दूसर-धूसर (वसु-धारा) कुल के चन्द्रमा हेमचन्द्र की गाथाएं यावच्चन्द्रदिवाकर लोक में विख्यात रहेंगी।

इति श्रीभारद्वाजगोत्रोत्पन्नः लखनऊनगर-वास्तव्यः परमेतिहासविद् महामहोपाध्याय श्रीकृष्णनारायणपाण्डेयमहोदयेन विरचितम् हिन्द्वार्य-साम्राज्यस्य अधर्मतमसविध्वंसक प्रभानिकरादित्य श्रीहेमचन्द्रभार्गव विक्रमादित्यस्य गौरवगाथारूपी "स्वाराष्ट्राय स्वाहा सर्वम्" नाम्नः चरितकाव्यस्य हरियानकप्रान्तरे भवानीनगरवास्तव्यः अत्रिगोत्रावतंश पंडितबजरंगलालशर्मकृत भाषानुवादसमाप्तः अक्षयतृतीया, गतकलि पंचसहस्रैकशतैकादशः ।

शुभमिति : जयतु भारतं राष्ट्रम् ।

परिशिष्टम्–१ **हेमचन्द्र विक्रमादित्य तिथिक्रमः**

कलियुग सम्वत की ४६वीं शताब्दी का स्वातंत्र्य समर

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४५०१	१४५६	१३९९	विजय नगर नरेश बुक्क–२ १३९९–१४०६ ई. द्वारा भारत संस्कृति प्रोत्साहन।
४५०२	१४५७	१४००	वोगज कुई तथा एलअमर्ना के अभिलेखो में वैदिक नामों की लोक प्रसिद्धि।
४५०३	१४५८	१४०१	चन्द्रमा परिक्रमा २७ दिन ८ घंटा २१ मिनट की लोक प्रसिद्धि।
४५०४	१४५९	१४०२	प्रयाग में कुंभ मेला।
४५०५	१४६०	१४०३	मानव की मूलभाषा के विज्ञानी पाणिनि के व्याकरण की लोक प्रसिद्धि।
४५०६	१४६१	१४०४	अंतरिक्ष विज्ञानी आर्यभट्ट के सिद्धांतों की लोक प्रसिद्धि।
४५०७	१४६२	१४०५	रसायन शास्त्री नागार्जुन की लोक प्रसिद्धि।
४५०८	१४६३	१४०६	विजय नगर नरेश देवराय प्रथम १४०६–१४१२ ई. द्वारा संस्कृति प्रसार।
४५०९	१४६४	१४०७	परमाणु विज्ञान प्रणेता के रूप में महर्षि कणादि की लोक प्रसिद्धि।
४५१०	१४६५	१४०८	ऋतम् = धर्म, प्राकृतिक नियम की लोक प्रसिद्धि।
४५११	१४६६	१४०९	कलियुग से १३० वर्ष पहले सूर्य सिद्धांत के प्रचलन की लोक प्रसिद्धि।
४५१२	१४६७	१४१०	आर्यभट्ट के पृथ्वी परिभ्रमण सिद्धांत की लोक प्रसिद्धि।
४५१३	१४६८	१४११	फरवरी २६ अहमदाबाद की स्थापना
४५१४	१४६९	१४१२	विजयनगर नरेश वीर विजय १४१२–१४१९ ई.
४५१५	१४७०	१४१३	ब्रह्मगुप्त के अंतरिक्ष विज्ञान ग्रंथ की अरबी में रूपांतरण की लोक प्रसिद्धि।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४५१६	१४७१	१४१४	प्रयाग राज में कुंभ मेला। मलय राजा परमेश्वर ने सुमात्रा की मुस्लिम राजकुमारी से विवाह करने के लिए धर्मांतरण किया।
४५१७	१४७२	१४१५	चार्ल्स ड्यूक ऑफ आर्लियन्स ने सर्वप्रथम लंदन से वेलेंटाइन अभिनंदन भेजा।
४५१८	१४७३	१४१६	गर्ग मुनि के द्वारा नक्षत्रों के पहिचान की लोक प्रसिद्धि।
४५१९	१४७४	१४१७	योगेश्वर कृष्ण के पुरोहित गर्ग मुनि की लोक प्रसिद्धि।
४५२०	१४७५	१४१८	आकाशमार्ग को २८ नक्षत्रों में विभाजित करने की लोकप्रसिद्धि।
४५२१	१४७६	१४१९	विजयनगर नरेश देवराय–II १४१९–१४४४ ई. द्वारा सनातन मानव संस्कृति प्रचार।
४५२२	१४७७	१४२०	जैनुल आबदीन संस्कृत प्रेमी कश्मीर नरेश १४२०–१४७०ई.।
४५२३	१४७८	१४२१	सूर्यवंशी मेवाड़ नरेश मोकल १४२१–१४३३ ई.।
४५२४	१४७९	१४२२	मैत्रायणी संहिता में २८ नक्षत्रों की गणना की लोकप्रसिद्धि।
४५२५	१४८०	१४२३	१२ राशियों की लोकप्रसिद्धि।
४५२६	१४८१	१४२४	खगोल को ३६० कल्पित भागों में विभक्त करने की लोक प्रसिद्धि।
४५२७	१४८२	१४२५	मानव धर्म शास्त्र में समय की गणना की लोक प्रसिद्धि।
४५२८	१४८३	१४२६	प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४५२९	१४८४	१४२७	नारायण तंत्र समुच्चय में कल्पाब्द की लोक प्रसिद्धि।
४५३०	१४८५	१४२८	विश्व के प्राचीनतम् संविधान मनुस्मृति की लोक प्रसिद्धि।
४५३१	१४८६	१४२९	जोन आफ आर्क ने फ्रेंच सेना का नेतृत्व किया।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४५३२	१४८७	१४३०	वेदों में माह के दो पक्षों के उल्लेख की लोक प्रसिद्धि।
४५३३	१४८८	१४३१	थाई राजा राम का अंकोरवाट तक राज्य विस्तार।
४५३४	१४८९	१४३२	आर्यभट्ट द्वारा वर्णित वैज्ञानिक सूर्य, चन्द्र ग्रहण की लोक प्रसिद्धि।
४५३५	१४९०	१४३३	राणा कुम्भा १४३३–१४६८ ई. चित्तौड़ में विजय स्तम्भ निर्माता।
४५३६	१४९१	१४३४	उत्कल नरेश सूर्यवंशी कपिलेन्द्र १४३४–१४७० ई.
४५३७	१४९२	१४३५	आर्यभट्ट के अनुसार चन्द्रमा के सूर्य के प्रकाश से चमकने की लोक प्रसिद्धि।
४५३८	१४९३	१४३६	आर्यभट्ट के अनुसार उत्तरी ध्रुव दक्षिणी ध्रुव बडवामुख की लोक प्रसिद्धि।
४५३९	१४९४	१४३७	महुआ अभिलेख में गुजरात की लोक प्रसिद्धि।
४५४०	१४९५	१४३८	प्रयाग राज में कुंभ मेला। प्रकृति पुजारी इन्का राजा का पेरू में अभिषेक।
४५४१	१४९६	१४३९	पृथ्वी के घूमने के आर्यभट्टीय विज्ञान की लोक प्रसिद्धि।
४५४२	१४९७	१४४०	ऐतरेय ब्राह्मण में सूर्य के कभी अस्त न होने की लोक प्रसिद्धि।
४५४३	१४९८	१४४१	कल्प मन्वंतर युग की गणना की लोक प्रसिद्धि।
४५४४	१४९९	१४४२	कलियुग के ४३२००० वर्षों की गणना की लोक प्रसिद्धि।
४५४५	१५००	१४४३	द्वापर युग के ८३२००० वर्षों की गणना की लोक प्रसिद्धि।
४५४६	१५०१	१४४४	त्रेता युग के १२९६००० वर्षों की गणना की लोक प्रसिद्धि।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४५४७	१५०२	१४४५	सतयुग के १७२८००० वर्षों की गणना की लोक प्रसिद्धि।
४५४८	१५०३	१४४६	१० कलियुग = १ महायुग की लोक प्रसिद्धि।
४५४९	१५०४	१४४७	७४ महायुग = १ मन्वन्तर की लोक प्रसिद्धि।
४५५०	१५०५	१४४८	ब्रिटेन में मानव दासों की बिक्री की कुप्रथा।
४५५१	१५०६	१४४९	शंकर देव १४४९–१५६९ ई. असम में भक्ति अभियान।
४५५२	१५०७	१४५०	प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४५५३	१५०८	१४५१	कोलम्बस १४५१– १५०६ ई. में अमेरिका से स्पेन आलू लाये।
४५५४	१५०९	१४५२	प्रथम बाईबिल प्रकाशित।
४५५५	१५१०	१४५३	तुर्कों द्वारा पूर्वी रोम साम्राज्य का विनाश।
४५५६	१५११	१४५४	१००० चतुर्युग = १ कल्प की लोक प्रसिद्धि।
४५५७	१५१२	१४५५	१ कल्प = ब्रह्मा के १ दिन की लोक प्रसिद्धि।
४५५८	१५१३	१४५६	२ कल्प = ब्रह्मा के दिनरात की लोक प्रसिद्धि।
४५५९	१५१४	१४५७	विश्व की प्रथम राजधानी नगर वर्हिष्मती जीन्द हरियाणा में वाराह तीर्थ के नाम से प्रसिद्धि।
४५६०	१५१५	१४५८	नैमिषाराण्य में मनुशतरूपा की समाधि की ख्याति।
४५६१	१५१६	१४५९	राजा जोधा द्वारा जोधपुर स्थापना।
४५६२	१५१७	१४६०	१५२४ ई. पुर्तगाली वास्कोडिगामा भारत यात्री
४५६३	१५१८	१४६१	थाईलैंड द्वारा कम्बोडिया विजय। अंकोरवाट मंदिर निर्माण।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४५६४	१५१६	१४६२	प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४५६५	१५२०	१४६३	ब्रह्मावर्त बिठूर ध्रुव दुर्ग की ख्याति।
४५६६	१५२१	१४६४	मधुपुरी यमुनातट पर मथुरा में धवतपोभूमि की ख्याति।
४५६७	१५२२	१४६५	आश्विन शुक्ल १० सं. १५२२ बीका द्वारा बीकानेर की स्थापना यात्रा में कर्णीदेवी का आशीर्वचन प्राप्त।
४५६८	१५२३	१४६६	मथुरा यमुना तट पर सप्तर्षि घाट की ख्याति।
४५६९	१५२४	१४६७	मणिपुर में विष्णु मंदिर निर्माण।
४५७०	१५२५	१४६८	पाण्डुपुरी पडरी उन्नाव के संगरेश्वर मंदिर की ख्याति।
४५७१	१५२६	१४६९	गुरूनानक देव १४६९–१५३८ ई. सिक्ख पंथ प्रवर्तक। महमूद बेहड़ा द्वारा सोमनाथ विध्वंश।
४५७२	१५२७	१४७०	षष्ठ सोमनाथ जीर्णोद्धार
४५७३	१५२८	१४७१	अयोध्या से श्रंगवेरपुर भरत मार्ग की ख्याति।
४५७४	१५२९	१४७२	चित्रकूट में प्राचीन भरत कूप की ख्याति।
४५७५	१५३०	१४७३	श्रीकृष्ण की ४७००वीं जयंती।
४५७६	१५३१	१४७४	प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४५७७	१५३२	१४७५	चैत्र शुक्ल ९ मार्च सोमवार १००वां यज्ञ में सवा लाख लोगों का ब्रह्मभोज
४५७८	१५३३	१४७६	अगस्त्य पर्वत मनमाड में मानव निर्मित गुफा दुर्ग की ख्याति।
४५७९	१५३४	१४७७	पंचवटी में सीताराम निवास गुहा की ख्याति।
४५८०	१५३५	१४७८	वल्लभाचार्य २९ मार्च रविवार १४७८–१५३० ई. जन्म।
४५८१	१५३६	१४७९	तृतीय गुरू अमर दास जी १४७९–१५३० ई. जन्म।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४५८२	१५३७	१४८०	पंचतंत्र का जर्मनी में अनुवाद।
४५८३	१५३८	१४८१	पंचतंत्र का डच में अनुवाद।
४५८४	१५३९	१४८२	मार्टिन लूथर जर्मनी के धर्म सुधारक।
४५८५	१५४०	१४८३	पंचवटी रामेश्वर के मार्ग में किष्किंधा तीर्थ की ख्याति।
४५८६	१५४१	१४८४	किष्किंधा में पंपा सरोवर तथा तुंगभद्रा महानदी की ख्याति।
४५८७	१५४२	१४८५	तुंगभद्रा नदी तट पर सीताराम कोदण्ड मंदिर की ख्याति।
४५८८	१५४३	१४८६	प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४५८९	१५४४	१४८७	किष्किंधा पर्वत गुफा दुर्ग की प्रसिद्धि।
४५९०	१५४५	१४८८	कुमायूं राजा कीर्ति चंद्र १४८८–१५०३ ई।
४५९१	१५४६	१४८९	कुमायूं राजा कीर्तिचंद्र द्वारा कीर्तिपुर कोट की जसपुर–काशीपुर के पास स्थापना।
४५९२	१५४७	१४९०	अहमद नगर में विलास शाही राज्य गोइन्दवाल में अकबर का अमरदास के दरबार में आना।
४५९३	१५४८	१४९१	भारत लंका के मध्य श्री राम सेतु की ख्याति।
४५९४	१५४९	१४९२	क्रिस्टोफर कोलम्बस की अमेरिका यात्रा।
४५९५	१५५०	१४९३	इन्द्र प्रस्थ महाभारत कालीन नगर की प्रसिद्धि।
४५९६	१५५१	१४९४	हस्तिनापुर के प्राचीन शिवालय की प्रसिद्धि।
४५९७	१५५२	१४९५	द्वारका के द्वारकाधीश मंदिर की प्रसिद्धि।
४५९८	१५५३	१४९६	अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की प्रसिद्धि।
४५९९	१५५४	१४९७	तुलसीदास १४९७–१६२३ ई. सनातन मानव धर्म समन्वयक।
४६००	१५५५	१४९८	वल्लभाचार्य, १४९८–१५३० ई. पुष्टिमार्ग भक्तिप्रचारक वास्कोडिगामा कालीकट आये।

कलियुग सम्वत की ४७वीं शताब्दी का स्वातंत्र्य समर

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४६०१	१५५६	१४९९	स्वामी बल्लभाचार्य का विजय नगर नरेश कृष्ण देवराय द्वारा कनकाभिषेक ।
४६०२	१५५७	१५००	पश्चिमोत्तर में कलश जनजाति के चित्राल मंदिरों की प्रसिद्धि ।
४६०३	१५५८	१५०१	ग्राम मछेरी अलवर में हेमू का जन्म पिताश्री पं० पूर्णदास । ओरछा नरेश रुद्र प्रताप १५०१-१५३१ ई० की रानी श्रीमती रूप कुमारी द्वारा अयोध्या के रामजन्म भूमि मंदिर का नवीकरण ।
४६०४	१५५९	१५०२	ब्रह्म देश में मानव धर्म शास्त्र मनुस्मृति का अनुवाद पाली में मनुसार नाम से किया गया ।
४६०५	१५६०	१५०३	कुमायूं राजा प्रताप चंद १५०३-१५१७ ई०।
४६०६	१५६१	१५०४	गुरुनानक ने बढ़ई लालों के घर भोंजन करके भेद भाव के पाखण्ड को हटाया।
४६०७	१५६२	१५०५	मारवाड़ के राठौर वंश में मीराबाई का जन्म। हेमू के बाल सखा सहदेव बने ।
४६०८	१५६३	१५०६	गुरुनानक देव के दिल्ली आगमन पर गुरुद्वारा नानक प्याऊ का निर्माण ।
४६०९	१५६४	१५०७	मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर की प्रसिद्धि । हेमू की शिक्षा प्रारम्भ ।
४६१०	१५६५	१५०८	देहू में तुकाराम का जन्म । हेमू की सैनिक शिक्षा घुड़सवारी ।
४६११	१५६६	१५०९	हेमू की बल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षा ।
४६१२	१५६७	१५१०	प्रयाग राज में कुम्भ मेला । बालक हेमू ने संस्कृत, अरबी, फारसी की शिक्षा

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			प्राप्त की ।
४६१३	१५६८	१५११	बर्मा देश में पुर्तगालियों का प्रभुत्व ।
४६१४	१५६९	१५१२	लक्ष्मण पुर लखनऊ में शेषनाग मंदिर की प्रसिद्धि । हेमू की हिंगलाज तीर्थयात्रा ।
४६१५	१५७०	१५१३	अयोध्या ब्रह्मावर्त मार्ग में उत्पलारण्य परिसर की प्रसिद्धि । हेमू की शक्तिपीठ जालंधर यात्रा ।
४६१६	१५७१	१५१४	बेलारुद्र पुर ग्राम में वाल्मीकि जन्म भूमि की प्रसिद्धि । हेमू की शक्तिपीठ कांची यात्रा ।
४६१७	१५७२	१५१५	कन्नौज में विश्वामित्र की राजधानी महोदयपुर की प्रसिद्धि । हेमू की शक्तिपीठ महालक्ष्मी कोल्हापुर यात्रा ।
४६१८	१५७३	१५१६	कम्पिल में प्राचीन आयुर्वेद सम्मेलन की प्रसिद्धि । हेमू की नागेश्वर ज्योतिर्लिंग यात्रा ।
४६१९	१५७४	१५१७	कुमायूं राजा ताराचंद्र १५१७-१५३३ ई० । हेमू की शक्तिपीठ अम्बादेवी गुजरात यात्रा ।
४६२०	१५७५	१५१८	गुरुनानक की बगदाद यात्रा । गोल कुण्डा में कुतुब शाही शासन । हेमू की सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग यात्रा ।
४६२१	१५७६	१५१९	मेगलन द्वारा पृथ्वी परिक्रमा यात्रा प्रारम्भ। हेमू की लेह लद्दाख शक्तिपीठ श्री पर्वत यात्रा ।
४६२२	१५७७	१५२०	चंदेरी दुर्ग पर राजा संग्राम सिंह की विजय। हेमू की बद्रीनाथ धाम यात्रा ।
४६२३	१५७८	१५२१	मीरा भोजराज विवाह । गुरुनानक की

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			मुलतान यात्रा । हेमू की लोकपाल ब्रह्मपुरी तीर्थ यात्रा ।
४६२४	१५७९	१५२२	प्रयाग राज में कुंभ मेला । भारत का प्राचीन मानचित्र भारत प्रेमी फ्रेंडशिप द्वारा निर्मित। हेमू की विमला देवी शक्तिपीठ/जगन्नाथ धाम यात्रा ।
४६२५	१५८०	१५२३	श्रीलंका के राजा शिवराम की गुरुनानक से भेंट । हेमू की कालीकोट शक्तिपीठ यात्रा।
४६२६	१५८१	१५२४	भोजराज द्वारा चित्तौड़गढ़ में मीरा हेतु श्रीकृष्ण मंदिर का निर्माण ।
४६२७	१५८२	१५२५	योरोप में लड़ाकू जहाज बनाने का प्रारम्भ।
४६२८	१५८३	१५२६	मीराबाई के पति युवराज भोजराज का खानवा युद्ध में बलिदान । हेमू की बल्लभाचार्य पीठ यात्रा ।
४६२९	१५८४	१५२७	किन्नर किरात लोगों का कुमायूं नेपाल तथा सिक्किम में निवास । आक्रामक बाबर द्वारा अयोध्या में श्रीराम मंदिर ध्वंस। हेमू द्वारा पारिवारिक व्यापार प्रारम्भ ।
४६३०	१५८५	१५२८	अस्कोट के राजी लोगों में चोटी रखना प्रतिबंधित । अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का बाबर के द्वारा ध्वंस कराया गया।
४६३१	१५८६	१५२९	किरात राजियों के देवता का प्राचीन नाम खुदाई, राजा को माऊ छोटा भाई कहने की प्रथा ।
४६३२	१५८७	१५३०	हेवंग नामग्याल लद्दाख नरेश १५३०-१५६० ई० । कुमायूं लोगों में जनेऊ से व्रत ग्रहण की प्रथा ।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४६३३	१५८८	१५३१	पंचांग में सृष्टि सम्वत् की प्रसिद्धि ।
४६३४	१५८९	१५३२	स्पेन द्वारा पेरू देश में इनका सभ्यता विनाश । कुल्लू के राजा बहादुर सिंह १५३२-१५७५ ई० ।
४६३५	१५९०	१५३३	रैवतक पर्वत रेवाड़ी नाम से प्रसिद्ध ।
४६३६	१५९१	१५३४	प्रयाग राज में कुम्भ मेला । चतुर्थ सिक्ख गुरु रामदास १५३४-१५८१ ई० द्वारा अमृतसर निर्माण ।
४६३७	१५९२	१५३५	मीराबाई की द्वारका यात्रा ।
४६३८	१५९३	१५३६	तिब्बत हूण लोगों की. भोट नाम से प्रसिद्धि।
४६३९	१५९४	१५३७	नेपाल में हूण मग नाम से प्रसिद्ध ।
४६४०	१५९५	१५३८	राजा कुम्भा द्वारा विजय स्ताम्भ स्थापना । जावा के भरत धर्मी मज पहित राज्य १५३३-१५३८ ई० की समाप्ति ।
४६४१	१५९६	१५३९	कुंभलगढ़ में स्वातंत्र्य समर सेनानी राणा प्रताप का जन्म । शेरशाह सूरी का दिल्ली पर अधिकार । पाण्डवदुर्ग में कुंती मंदिर का जीर्णोद्धार ।
४६४२	१५९७	१५४०	पृथ्वी ग्रह पर प्रथम राज्य ब्रह्मावर्त बिठूर नाम से प्रसिद्ध । पाण्डव दुर्ग इन्द्रप्रस्थ में भैरव मंदिर का नवीकरण ।
४६४३	१५९८	१५४१	पृथ्वी ग्रह के जम्बूद्वीप की स्मृति जम्मू नगर के नाम से प्रसिद्ध ।
४६४४	१५९९	१५४२	विजय नगरेश सदाशिव १५४२-१५६७ ई०। राजा भगवान गोविन्द दीक्षित द्वारा वेद काव्य पाठशाला कुम्भकोणम् में स्थापित। उड़ीसा में भोई राजवंश प्रारम्भ । कुमायूं

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			राजा कल्याण चंद १५४२-१५३१ ई० । राजा गोविन्द १५४२-१५५९ ई० ।
४६४५	१६००	१५४३	नीति गांव में हिमालय पर्वत में भविष्य बद्री मंदिर की प्रसिद्धि ।
४६४६	१६०१	१५४४	सारस्वत ब्राह्मण परिवार में संत दादू दयाल का जन्म । पंचतंत्र का फ्रेंच में अनुवाद।
४६४७	१६०२	१५४५	अफगानी सत्ता के विरुद्ध कालिंजर भारती चंद्र राजा । शेरशाह सूरी के यम थे, समिधा थी बारूद और घृत शोणित ताजा।
४६४८	१६०३	१५४६	पंचतंत्र का हंगेरियन में अनुवाद । प्रयाग में कुंभ ।
४६४९	१६०४	१५४७	वैष्णव संतों में पूजा बलिदान में फल, फूल, नारियल चढ़ाने की परम्परा ।
४६५०	१६०५	१५४८	यात्रा दिक्शूल प्रचलित । कवि रसखान १५४८-१६२८ ई० ।
४६५१	१६०६	१५४९	कश्मीर में बारामूला से २३ कि०मी० दूर बेमिसार में प्राचीन विष्णु शिवमंदिर की प्रसिद्धि ।
४६५२	१६०७	१५५०	लेह लद्दाख में स्पितुक गुफा काली मंदिर शक्तिपीठ की प्रसिद्धि ।
४६५३	१६०८	१५५१	कुमायूं राजा पूर्वचंद १५३१-१५५५ ई० ।
४६५४	१६०९	१५५२	कश्मीर घाटी में क्षीर भवानी मंदिर की ख्याति ।
४६५५	१६१०	१५५३	बरमूला झेलम तट पर प्राचीन शिव मंदिर।
४६५६	१६११	१५५४	काशी में जगन्नाथ यात्रा प्रारम्भ ।
४६५७	१६१२	१५५५	कवि केशव द्वारा ज्ञान गीता ओरछा राजामधुकर को समर्पित । राजा भीष्मसिंह चंद १५५५-१५६० ई० ।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४६५८	१६१३	१५५६	अकबर मुगल बादशाह बने । हेमचन्द्र विक्रमादित्य की स्वातंत्र्य समर सेनानी नाम से प्रसिद्धि ।
४६५९	१६१४	१५५७	गोवा में प्रथम पुस्तक प्रकाशित ।
४६६०	१६१५	१५५८	प्रयाग राज में कुंभ मेला ।
४६६१	१६१६	१५५९	उड़ीसा नरेश मुकुन्द हरिश्चंद ।
४६६२	१६१७	१५६०	द्वारकानाथ मूर्ति की बेट (भेंट) द्वारका में स्थापना। कुमायूं राजा कल्याण चंद्र १५६०-१५६८ ई० ।
४६६३	१६१८	१५६१	भारतीय सनातन धर्म में सभी महापुरुषों के अभिनंदन की परंपरा की प्रसिद्धि ।
४६६४	१६१९	१५६२	दास व्यापार हेतु जीसस जहाज से अफ्रीका गया ।
४६६५	१६२०	१५६३	पंचम सिक्ख गुरु अर्जुन देव जी ने अमृतसर की स्थापना की ।
४६६६	१६२१	१५६४	शांता दुर्ग मंदिर स्थापना गोमान्तक गोवा में ।
४६६७	१६२२	१५६५	मीराबाई का बेट द्वारका प्रवास ।
४६६८	१६२३	१५६६	भरद्वाज गोत्र के पंत ब्राह्मणों का अल्मोड़ा राज्य में प्रवास एवं सम्मान ।
४६६९	१६२४	१५६७	विजय नगर साम्राज्य विदेशी मुस्लिमों द्वारा ध्वंश ।
४६७०	१६२५	१५६८	तिब्बत तक कुमायूं राज्य । चित्तौड़ जौहर अकबर द्वारा हत्याकाण्डम् ।
४६७१	१६२६	१५६९	रूपचंद द्वारा तराई को विदेशी मुंस्लिमों से मुक्त कराया ।
४६७२	१६२७	१५७०	प्रयाग राज में कुंभ मेला ।
४६७३	१६२८	१५७१	मुद्रा के रूप में दाम का प्रचलन कुमायूं

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			राज्य में ।
४६७४	१६२९	१५७२	अकबर दूत भगवन्त दास राणा प्रताप से मिले । १ मार्च । राणाप्रताप राज्य १५७२-१५९७ ।
४६७५	१६३०	१५७३	श्रीकृष्ण की ४८०० वीं जयन्ती ।
४६७६	१६३१	१५७४	अकबर के समय कुमायूं एक प्रदेश घोषित।
४६७७	१६३२	१५७५	चंद्रवंशी सहजपाल (गढ़वाल) १५७५-१५९५ ई० ।
४६७८	१६३३	१५७६	हल्दी घाटी युद्ध २१ जून ।
४६७९	१६३४	१५७७	कुम्भलगढ़ में राणा प्रताप ।
४६८०	१६३५	१५७८	पर्वतीय प्रदेश में राणा प्रताप की किलेबंदी।
४६८१	१६३६	१५७९	शाहनाज खां असफल । राणा प्रताप का आबू प्रवास।
४६८२	१६३७	१५८०	अब्दुल रहीम खान खाना बन्धू प्रत्यावर्तित राणा प्रताप द्वारा ।
४६८३	१६३८	१५८१	राजा रूप चंद्र द्वारा जागीश्वर मंदिर हेतु ताम्र पत्र दिया गया ।
४६८४	१६३९	१५८२	प्रयाग राज में कुंभ मेला ।
४६८५	१६४०	१५८३	२४ प्रसिद्ध अवतारों में प्रथम जैन तीर्थंकर के भी समावेश की प्रसिद्धि ।
४६८६	१६४१	१५८४	जगन्नाथ कहवाहा की राणाप्रताप से वार्ता।
४६८७	१६४२	१५८५	पंजाब में अकबर भ्राता हकीमसूर द्वारा विद्रोह । राधावल्लभ सम्प्रदाय की हरिवंश द्वारा प्रसिद्धि ।
४६८८	१६४३	१५८६	अमृतसर के पक्के घाटों का निर्माण गुरु अर्जुन देव द्वारा ।
४६८९	१६४४	१५८७	संस्कृत शिक्षा का अल्मोड़ा राज्य में प्रसार।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४६९०	१६४५	१५८८	स्पेन इंग्लैंड जल युद्ध
४६९१	१६४६	१५८९	शेख मियां मीर द्वारा स्वर्ण मंदिर शिलान्यास
४६९२	१६४७	१५९०	१६३५ ई. लद्दाख नरेश सिंगे नामग्याल (१५९०-१६३८ ई०) ।
४६९३	१६४८	१५९१	चंद्रवंशी मानशाह (गढ़वाल) १५९१-१६१० ई०)।
४६९४	१६४९	१५९२	श्येन शास्त्र व धर्म निर्णय दो संस्कृत ग्रन्थ कुमायूं नरेश ने लिखे ।
४६९५	१६५०	१५९३	१६०५ ई० द्वारका में त्रैलोक्य सुन्दर मंदिर निर्माण ।
४६९६	१६५१	१५९४	प्रयाग राज में कुंभ मेला ।
४६९७	१६५२	१५९५	१६२० ई० सेंगे नामग्याल तिब्बत राज्यम्। छठे सिक्ख हरगोविन्द साहब जी १५९५-१६४४ ई० ।
४६९८	१६५३	१५९६	१६८९ ई० संत सुन्दर दास ।
४६९९	१६५४	१५९७	तुलसीदास रामभक्त द्वारा सामाजिक परिवर्तन कारक १५९७-१६२३ ई० । स्वातंत्र्य समर सेनानी राणा प्रताप का निधन । चीन में आयुर्वेद ग्रंथ प्रस्थान ।
४७००	१६५५	१५९८	अकबर की राजधानी लाहौर । समरकंद में विक्रमादित्य ५७ ई०पू० द्वारा स्थापित ज्योतिष वेधशाला (बाबरनामा पृ० ६६) की प्रसिद्धि ।

कलियुग सम्वत की ४८वीं शताब्दी का स्वातंत्र्य समर

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४७०१	१६५६	१५६६	राणा प्रताप के पुत्र राणा अमर सिंह १५६७–१६२० ई. द्वारा अस्मिता रक्षा। बैंगी जोगिया, जोगी तथा वेटिया समाज की रामभक्ति।
४७०२	१६५७	१६००	संत तुलसीदास रचित राम चरित मानस महाकाव्य प्रचार।
४७०३	१६५८	१६०१	संत तुलसीदास द्वारा राजापुर में संकटमोचन मंदिर की स्थापना।
४७०४	१६५६	१६०२	संत तुलसीदास द्वारा परसपुर पस्का घाघरा, सरयू संगम में नरहरि गुरू स्मारक निर्माण।
४७०५	१६६०	१६०३	अयोध्या में रामचरित मानस पारायण। रामजन्मभूमि मंदिर में श्रीराम जयंती समारोह। १० ईशावतारों की मूर्तियों में बुद्ध की मूर्ति की प्रसिद्धि।
४७०६	१६६१	१६०४	चित्रकूट में हनुमान धारा मंदिर जीर्णोद्धार। हरमंदिर साहेब में आदि ग्रन्थ प्रकाश।
४७०७	१६६२	१६०५	१०८ वर्षीय तुलसीदास द्वारा संकट मोचन मंदिर काशी में दैनिक संस्कृत समारोह। ओरछा नरेश वीर सिंह १६०५–१६२७ ई. पत्नी प्रवीण राय कवि।
४७०८	१६६३	१६०६	दीन–ए–इलाही के प्रेरक अकबर (१५४२–१६०६ ई.) का निर्वाण। प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४७०६	१६६४	१६०७	मुगल बादशाह जहांगीर द्वारा नाक कान काटने का दण्ड समाप्त किया गया। ३० मई इस्लाम के विरोध में गुरू अर्जुन की हत्या।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना . विवरणम्
४७१०	१६६५	१६०८	समर्थ गुरू रामदास जन्म जयंती चैत्र शुक्ल ६ को, ऋग्वेदी जन्म जमदग्नि गोत्र के सूर्याजी पंत एवं राणूबाई कुलकर्णी (पटवारी) विप्र परिवार में जाम्ब महाराष्ट्र समर्थ रामदास १६०८–१६८२ ई. शिवाजी के मार्गदर्शक।
४७११	१६६६	१६०६	संत मलूकदास १५७४–१६८२ ई. के साथ तुलसीदास का सत्संग काशी में। महात्मा बुद्ध पूर्वजन्म में बोधिसत्व श्रीराम की प्रसिद्धि।
४७१२	१६६७	१६१०	१६२६ ई. श्याम षाह गढ़वाल नरेश। रातारों में अगस्तय, त्रिशुंक क्रतु तथा ध्रुव के नामों की प्रसिद्धि।
४७१३	१६६८	१६११	काशी में अकबर के नवरत्नों में से एक टोडरमल द्वारा मानस संरक्षण। मसूली पटनम में अंग्रेजों का कारखाना स्थापित।
४७१४	१६६६	१६१२	काशी में अकबर के नवरत्नों में से एक टोडरमल द्वारा मानस संरक्षण। अकबर मंत्री टोडरमल वंशज विवाद में तुलसी निर्णय पत्र। महात्मा बुद्ध के समय १६ महाजनपद अशोक पौत्र।
४७१५	१६७०	१६१३	नारायण समर्थ गुरू रामदास की यज्ञोपवीत दीक्षा। सम्प्रति के समय २५ आर्य क्षेत्रों में विभाजित हो गए। इनका विस्तार पश्चिम में सिन्धु तक्षशिला से लेकर पूर्व में जनकपुर नेपाल तक।
४७१६	१६७१	१६१४	राणा अमरसिंह की मुगलों से मैत्री संधि।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४७१७	१६७२	१६१५	जहांगीर ने पुर्तगालियों से शांति संधि की। २४ अवतारों में से भगवान पृथु के नाम से पृथ्वी ग्रह के नामकरण की प्रसिद्धि।
४७१८	१६७३	१६१६	अंग्रेज राजदूत सर टामसरो १६१५—१६१६ ने भारत में व्यापार की अनुमति मुगल बादशाह से प्राप्त की। डच लोगों द्वारा सूरत में कारखाना लगाया गया।
४७१९	१६७४	१६१७	नारायण द्वारा त्रयोदश अक्षरी मंत्र श्री राम जयराम जय जय राम का स्वतः ग्रहण। रामायण के २४ के श्लोको की प्रसिद्धि।

सर्व धर्म समन्वयक

महामति प्राणनाथ का जीवन वृत्तांत

४७२०	१६७५	१६१८	सर्वधर्म समन्वय प्रेरक व छत्रसाल के मार्गदर्शक महामति प्राण नाथ (१६१८—१६९४ ई.) जन्म। प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४७२१	१६७६	१६१९	तुलसीदास का असीघाट काशी में निवास। विश्व के प्रथम संविधान मानवधर्म शास्त्र १२०० श्लोकों की प्रसिद्धि।
४७२२	१६७७	१६२०	राणा कर्ण सिंह का उदयपुर में राज्याभिषेक। समर्थ गुरू रामदास नारायण का वैरागी होकर तकाली पंचवटी में साधना।
४७२३	१६७८	१६२१	तुलसीदास द्वारा हनुमान वाहुक व विनय पत्रिका की रचना। कुमायूं राजा विजय चंद १६२४—१६२५ ई. द्वारा संस्कृत प्रसार।
४७२४	१६७९	१६२२	काशी में तुलसीदास की समर्थ गुरू रामदास से भेंट।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४७२५	१६८०	१६२३	गोस्वामी तुलसीदास निर्वाण। महाभारत ज्ञानकोश के १,००,००० श्लोकों की प्रसिद्धि।
४७२६	१६८१	१६२४	नासिक पंचवटी में समर्थ की साधना। कुमायूं राजा विजय चंद १६२४--१६२५ ई.
४७२७	१६८२	१६२५	पुरश्चरण गायत्री मंत्र तथा श्रीराम जय राम जय जय राम की तपस्या। कुमायूं नरेश राजा विमल चंद्र १६२४–१६२५ ई.।
४७४३	१६६८	१६४१	प्रतिष्ठानपुर यात्रा नागेश्वर, भीमाशंकर, घुश्मेश्वर त्र्यम्बकेश्वर दर्शन। सूर्यवंशी राणा अमर सिंह १६६८–१७१० ई.।
४७४४	१६६६	१६४२	जरण्डेश्वर हनुमान मंदिर में साधना। प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४७४५	१७००	१६४३	मंदिरों को समाज केन्द्र बनाने का अभियान। माघ माह में फाल्गुन में हवा की दिशा पूरब की ओर की प्रसिद्धि।
४७४६	१७०१	१६४४	मंदिरों में शास्त्रीय ग्रन्थों का प्रवचन एवं अनुशासित दिनचर्या। प्राचीन इतिहास में १५ विक्रमादित्यों की प्रसिद्धि।
४७४७	१७०२	१६४५	समर्थ गुरू रामदास द्वारा ब्रह्मपुर में दुर्गरूप प्रथम मारूति मंदिर की स्थापना। शालिवाहन राजाओं की प्रसिद्धि।
४७४८	१७०३	१६४६	१६ वर्षीय शिवाजी द्वारा तोरण दुर्ग विजय।
४७४६	१७०४	१६४७	चाफल में मंदिर निर्माण समर्थ गुरू रामदास द्वारा राणा जगतसिंह १६२८–१६५८ ई. द्वारा जगन्नाथ यात्रा प्रारम्भ।
४७५०	१७०५	१६४८	२१ वर्षीय शिवाजी द्वारा पुरंदर दुर्ग विजय। पन्ना नरेश छत्रसाल (१६४८–१७३१ ई.) का

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			जन्म ज्येष्ठ शुक्ल ३ शुक्रवार को ककर कचनए ग्राम, मोर पहाड़ी जंगल में।
४७५१	१७०६	१६४६	समर्थ गुरू रामदास द्वारा चाफल मंदिर की स्थापना। शिवाजी का दर्शनार्थ आना।
४७५२	१७०७	१६५०	माजगांव सतारा में मंदिर दुर्ग का निर्माण।
४७५३	१७०८	१६५१	उदयपुर में राणा राज सिंह का राज्याभिषेक। प्राणनाथ की जामनगर में वापसी। मंदिरों को सैनिक छावनी बनाने का अभियान प्रारम्भ।
४७५४	१७०९	१६५२	बहेंबोर गांव तथा मनपाडले सतारा जनपद में दो मंदिर दुर्गो का निर्माण। राज समुद्र सरोवर धरण निर्माण प्रारम्भ।
४७५५	१७१०	१६५३	पारगांव में मंदिर दुर्ग निर्माण। राजा जय सिंह जन्म। प्राणनाथ की दीवान पद पर सेवा।
४७५६	१७११	१६५४	शिवाजी द्वारा अनुग्रह प्राप्ति। गुरू मंत्र श्री राम जय राम जय जय राम की साधना। प्रयाग राज में कुंभ मेला। शाहजहां राजसिंह मिलन अजमेर में।
४७५७	१७१२	१६५५	समर्थ द्वारा शिवाजी को वेदान्त की समता का उपदेश। प्राणनाथ की गुरू देवचंद्र से अंतिम भेंट।
४७५८	१७१३	१६५६	सूर्यवंशी शिवाजी द्वारा जावली दुर्ग विजय। महामति प्राणनाथ असत्य दोषारोपण से बंदी।
४७५९	१७१४	१६५७	शिवाजी द्वारा दानपत्र द्वारा समर्थ गुरू रामदास को राज्य अर्पण। मुगल सेना द्वारा बीजापुर पर आक्रमण।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४७६०	१७१५	१६५८	समर्थ गुरू रामदास की रचना दासबोध में कलि संवत ४७६० का उल्लेख। महामति प्राणनाथ की प्रथम रचना श्री रास तथा दूसरी कृति प्रकाश का अवतरण व कारा मुक्ति। बीजापुर के शासक द्वारा शिवाजी के विरूद्ध षडयंत्र की कविता द्वारा जानकारी। औरंगजेब द्वारा उदारवादी बादशाह दाराशिकोह की हत्या कराकर मुस्लिम कट्टरता प्रारम्भ की गई।
४७६१	१७१६	१६५९	प्राणनाथ का प्रबोध पुरी प्रवास। अफजल खां का आक्रमण। शिवाजी द्वारा दिनांक १०.११.१६५९ को अफजल का वध। (कवीन्द्र परमानंद विरचित श्री शिव भारतम् पर आधारित शिवाजी के चरित्र के आंखों देखे वर्णन के अनुसार)
४७६२	१७१७	१६६०	शिवाजी द्वारा परली दुर्ग सज्जन गढ़ समर्थ गुरू रामदास को समर्पित।
४७६३	१७१८	१६६१	शिवाजी की दक्षिण दिग्विजय। राजप्रशस्ति अभिलेख रचना प्रारम्भ। मुम्बई में अंग्रेजों का अधिकार।
४७६४	१७१९	१६६२	छत्रसाल के पिता चम्पतराय, माता लाल कुंवर सारंधा का मुगलों के विरूद्ध स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान। चाफल राम मंदिर हेतु स्थाई आय की व्यवस्था।
४७६५	१७२०	१६६३	शिवाजी द्वारा ५ अगस्त को पुणे में शाइस्ता खां पराजित। शिवाजी द्वारा सूरत विजय।
४७६६	१७२१	१६६४	६ जनवरी को मराठा सेना द्वारा सूरत पर विजय। भारतीय चाय इंग्लैंड के सम्राट

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			को ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भेंट। स्वातंत्र्य सेनानी छत्रसाल ने शक्ति अर्जन हेतु भाई अंगद राय के साथ मुगल सेना में नौकरी स्वीकार की।
४७६७	१७२२	१६६५	प्राणनाथ का दीव द्वीप में प्रवास। दीव में धर्म प्रचार शिवाजी द्वारा फरवरी में गोकर्ण शिवार्चन। शिवाजी का छत्रसाल को मार्गदर्शन। मुगल सेनापति जय सिंह को शिवाजी का पत्र एवं संधि।
४७६८	१७२३	१६६६	दीव में धर्म प्रचार। अरबी डाकुओं का आक्रमण करके भारतीयों को बंधक बनाया गया। शिवाजी की ५ मार्च को दिल्ली यात्रा, १२ मई को आगरे में बंदी, १७ अगस्त को पलायन करके राजगढ़ में ११ सितम्बर को २५ दिनों में अश्वारोहण से शिवाजी का पहुंचना। छत्रसाल द्वारा बुंदेलखण्ड में स्वातंत्र्य ज्वाला जागृत।
४७६९	१७२४	१६६७	नबी पोरबंदर पाटन कच्छ में अपहरित लोगों की खोज। शिवाजी को राजा की उपाधि। सम्भा जी मुगल मन्सबदार।
४७७०	१७२५	१६६८	मांडवी भुज ठट्ठा नगर में खोज यात्रा एवं सत्संग। ६ मार्च को शिवाजी का औरंगजेब को मित्रता पत्र की स्वीकृति।
४७७१	१७२६	१६६९	प्राणनाथ का कबीर पंथी से सत्संग। ९ अप्रैल को हिन्दू पर्वों पर रोक तथा मंदिर विनाश का फरमान औरंगजेब द्वारा जारी। मथुरा शासक अब्दुल नबी का वध। काशी में विश्व नाथ मंदिर का ध्वंस। श्रीकृष्ण

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			जन्म भूमि केशव राय मंदिर मथुरा का विध्वंश।
४७७२	१७२७	१६७०	अबासी पत्तन के भैरो सेठ के घर में प्राण नाथ की धर्म पत्नी तेज कुंवर बाई सुरक्षित। जनवरी में शिवाजी द्वारा बरार में २५ लाख की लूट। विरोध में युद्ध की घोषणा।
४७७३	१७२८	१६७१	मस्कत में अरबी डाकुओं को फिरौती देने हेतु प्राण नाथ रूके तत्पश्चात बसरा प्रस्थान। राणा राज सिंह द्वारा नाथद्वारा श्रीकृष्ण मंदिर की स्थापना। ३ अक्तूबर को शिवाजी द्वारा सूरत की द्वितीय लूट।
४७७४	१७२९	१६७२	महामति प्राणनाथ की भारत में जनजाग्रति यात्रा। शिवाजी एवम् समर्थ रामदास का पत्राचार।
४७७५	१७३०	१६७३	श्रीकृष्ण की ४९००वीं जयंती। शिवाजी की पन्हाला दुर्ग विजय। सत्यनामी साधु की मुगलों द्वारा हत्या।
४७७६	१७३१	१६७४	५ जून को छत्रपति शिवाजी का रायगढ़ में राज्यारोहण समारोह। मेड़ता राजस्थान यात्रा में महामति प्राणनाथ ने निजानंद सम्प्रदाय के तारतम मंत्र तथा कुरान के कलमा में एकता की अनुभूति की।
४७७७	१७३२	१६७५	शिवाजी के गुरू परमानंद द्वारा शिव भारतम् की रचना। छत्रसाल ने पन्ना को अपनी राजधानी बनाया। प्राचीन विश्व के ४६ देशों की प्रसिद्धि।
४७७८	१७३३	१६७६	शिवाजी द्वारा पोण्डा गोवा पर विजय। औरंगजेब से मिलने के ध्येय से प्राणनाथ

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			की दिल्ली यात्रा। प्राचीन विश्व में ७ महाद्वीपों तथा ७ महासागरों की प्रसिद्धि।
४७७६	१७३४	१६७७	शिवाजी द्वारा कर्नाटक पर विजय। प्रयाग राज में कुंभ मेला।
४७८०	१७३५	१६७८	समर्थ गुरू रामदास की हेलवाक गुफा से चाफल यात्रा। शालिवाहन १६०० शके हरिद्वार कुम्भ में विश्व धर्म सम्मेलन में प्राणनाथ द्वारा एकता का प्रतिपादन। प्राणनाथ का उदयपुर मंदसौर प्रवास।
४७८१	१७३६	१६७६	शम्भा जी के लिए समर्थ गुरू रामदास जी का पत्र। १२ अप्रैल को औरंगजेब द्वारा हिन्दुओं पर जजिया कर लगाकर मनुष्य–मनुष्य में भेदभाव पैदा किया गया।
४७८२	१७३७	१६८०	शम्भा जी समर्थ गुरू रामदास की सेवा में। राजसमुद्र राजप्रशस्ति महाकाव्याभिलेख का अभिलेखन। प्राणनाथ का उज्जैन प्रवास।
४७८३	१७३८	१६८१	श्रीराम वंशज लक्ष्मण सिंह अजय, सुजान, दिलीप, शिव, तैरब, देवराज, उग्रसेन माहुल खेल, जनक, सत्य, शम्भू व शिवाजी के बाद १५वें शम्भा जी का राज्याभिषेक। महामति प्राणनाथ ने वेद, भागवत पुराण व कुरान की एकता प्रचारित की।
४७८४	१७३६	१६८२	राजपूतों तथा मराठों के सहयोग से औरंगजेब के विरूद्ध शाहजादा अकबर द्वारा विद्रोह। राठौर दुर्गादास के नेतृत्व में औरंगजेब के विरूद्ध स्वतंत्रता संग्राम। औरंगाबाद में प्राणनाथ ने राणा भाव सिंह को प्रेरित किया।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४७८५	१७४०	१६८३	मऊ तथा पन्ना में छत्रसाल प्राणनाथ भेंट। २२ जनवरी को समर्थ गुरू राम दास जी का निर्वाण। छत्रसाल का राज्याभिषेक।
४७८६	१७४१	१६८४	पट्टन घाटी में ब्राह्मणों का स्वांग्ला कनेतो से विवाह। वहां के ब्राह्मण १७% भूमि के स्वामी बने। शम्भा जी ने रामचंद्र नीलकंठ को समर्थ चरित्र संकलन हेतु आदेश दिए। लाल कवि द्वारा छत्रप्रकाश काव्य रचना में पन्ना नरेश छत्रसाल के स्वातंत्र्य समर का वर्णन।
४७८७	१७४२	१६८५	समर्थ चरित्र संकलन में समर्थ रामदास के जीवन की घटनाओं का वर्णन शक सम्वत के साथ किया गया। महामति प्राणनाथ का महाराज छत्रसाल को आशीर्वचन– **छत्ता तेरे राज्य में,** **धक धक धरती होय ।** **जित जित घोड़ा मुख करै,** **तित तित फत्ते होय ।।**
४७८८	१७४३	१६८६	राणा जय सिंह १६८०–१६९८ ई. द्वारा राज समुद्र प्रशस्ति अभिलेखन। पट्टन घाटी में ब्राह्मण के गांवों में बौद्ध भी शाकाहारी बने। पन्ना में महामति प्राणनाथ निवास बंगला मंदिर।
४७८९	१७४४	१६८७	शम्भा जी के सरक्षण में मराठों तथा राजपूतों की सम्मिलित शक्ति से औरंगजेब के ज्येष्ठ पुत्र अकबर की असफल क्रांति।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
			१४ जुलाई सूर्य ग्रहण के समय भारतीय ज्योतिष की प्रामाणिकता सिद्ध। प्राणनाथ द्वारा सत्य धर्म हकीकी दीन का प्रचार।
४७९०	१७४५	१६८८	गढ़वाल नरेश मेदनी शाह (१६७६–१६९६ ई.) द्वारा संस्कृति रक्षा। कुल्लू राजा मानसिंह (१६८८–१७०६ ई.) द्वारा संस्कृति प्रसार। महामति के शिष्य समुदाय सुन्दरसाथ का नियमित सत्संग।
४७९१	१७४६	१६८९	जसवन्त पुत्र राटौर अजीत सिंह द्वारा जोधपुर राज्य प्राप्ति। छत्रपति राजाराम का जिन्जी में अभिलेख। शाक्य मुनि अवलोकितेश्वर की पूजा परंपरा की प्रसिद्धि।
४७९२	१७४७	१६९०	कुमायूं नरेश उद्योत चंद्र (१६७८–१६९८ ई.) द्वारा हिमालय संस्कृति रक्षा। प्रयाग में कुम्भ मेला। प्राणनाथ द्वारा तुलनात्मक सत्य धर्म का प्रचार।
४७९३	१७४८	१६९१	महामति प्राणनाथ के निर्देशन में पन्ना में शास्त्रार्थ सम्मेलन। कुमायूं नरेश द्वारा उद्योत चंद्रेश्वर, पार्वतीश्वर, त्रिपुरादेवी, मंदिर निर्माण नंदादेवी के पास जो आज भी विद्यमान है। लाहुल हिमाचल के लामा (राम संत) ग्रहस्थ होते हैं।
४७९४	१७४९	१६९२	पन्ना में सर्व धर्म समन्वय केंद्र की स्थापना। अथर्व वेदज्ञ विप्र का दक्षिण से बुलाकर अल्मोड़ा में अभिनंदन किया गया। बौद्ध मठों में भी प्राचीन हिन्दू देवताओं की पूजा। नेवार जाति के लोगों में याक की बलि कुप्रथा प्रचलित।

कलियुग संवत्	विक्रम संवत्	ईस्वी संवत्	घटना विवरणम्
४७९५	१७५०	१६९३	प्राणनाथ सत्संग सभा। सतारा छत्रपति शाहू के राजकवि मनिराम का अल्मोड़ा नरेश द्वारा १०००/– रूपये से अभिनंदन।
४७९६	१७५१	१६९४	प्राणनाथ निर्वाण पन्ना, श्रावण शुक्ल ४ शुक्रवार को हुआ। छत्रसाल के राज्य बुंदेल खण्ड में यह पद प्रसिद्ध हुआ–

कृष्ण मुहम्मद देवचंद प्राणनाथ छत्रसाल।
इन पांचों को जो भजे दुख हरे तत्काल।।

प्राणनाथ के निर्देशन में छत्रसाल की राज्य सीमाएं बढ़ती गई–

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस।
छत्रसाल सौ लरन की रही न काहू होंस।।

४७९७	१७५२	१६९५	कन्नौज, गुजरात तथा दक्षिण के धर्माचार्यो का अल्मोड़ा के दरबार में सम्मेलन। जान्सकर का लामा आदरणीय संत।
४७९८	१७५३	१६९६	औरंगजेब की योगी सरमद की हत्या।
४७९९	१७५४	१६९७	छत्रसाल द्वारा (१६४८–१७३१ ई.) बुंदेलखंड में संस्कृति रक्षा। सूर्यवंशी राणा राजसिंह १७५४–१७६१ ई.।
४८००	१७५५	१६९८	राणा प्रताप वंशज राणा अमर सिंह द्वितीय का राज्याभिषेक। रूस में पीटर जार सुशासनम्। वीर दर्गादास द्वारा औरंगजेब के पुत्र अकबर के परिवार की वापसी।



अबुलफजल कृत अकबरनामा से

हेमू की दिल्ली पर चढ़ाई

18 अक्टूबर, 1556 को जालन्धर में खबर पहुंची कि हेमू शासक बनने का स्वप्न देख रहा है और दिल्ली पर अपना अधिकार करना चाहता है। हेमू का वृत्तान्त इस प्रकार है कि हेमू और इब्राहीम में कई युद्ध हुए। हब्राहीम सुल्तान बनना चाहता था परन्तु हेमू की सदैव विजय हुई। बंगाल में सुल्तान मुहम्मद शासक बन गया था परन्तु उसका अन्त हो चुका था। मुबारिज खां के विरोधियों से हेमू ने 22 (बाईस) लड़ाईयां लड़ीं और सब में विजयी हुआ। इससे उसका उत्साह बढ़ गया। जब बादशाह हुमायूं ने भारत को दुबारा जीता तो हेमू अन्य कामों में लगा हुआ था। अब शाहिनशाह अकबर राजसिंहासन को अलंकृत कर रहा था। उस समय हेमू ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को छोड़कर दिल्ली की ओर प्रयाण किया। मुबारिज खां को चुनार में छोड़ा। उस समय दिल्ली का हाकिम तर्दी बेग था, उसने युद्ध की तैयारी की। उसने सब जिलों से शाही अफसरों को बुला लिया था। ये सब लोग आ गये थे परन्तु अली-कुली-शेबानी नहीं आया था। वह सम्भल में अफगानों का दमन करने में लगा हुआ था। इसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि शादी खां मुबारिज खां का एक मुख्य अफसर था और सरकार सम्भल के कई परगने उसके सुपुर्द थे। अलीकुली खां उसके दमन के लिये रवाना हुआ। शादी खां ने अलीकुली शेबानी के अफसरों पर आक्रमण किया। लड़ाई रुहाब नदी के तट पर हुई। लतीफ खां, जो शादी खां का एक सरदार था और कुछ अन्य बड़े अफसर डूब कर मर गये थे। अली-कुली खां कुछ सरदारों के साथ शादी खां पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। जब अली-कुली खां नदी पार करने वाला था तो उसको तर्दी बेग खां का पत्र मिला कि हेमू बड़ी तैयारी करके आ रहा है। तब अली-कुली खां ने अपना काम छोड़ कर दिल्ली की ओर प्रयाण किया परन्तु उसके आने से पहले ही दिल्ली हेमू

के हाथ में आ गया था । तर्दी बेग खां की हार का एक कारण मौलाना पीर मुहम्मद खेखानी भी था ।

जब बादशाह हुमायूं की मृत्यु की खबर प्रान्त में फैल गई तो हेमू ने अकबर से युद्ध करने का साहस किया । उसने समझा कि अकबर अभी लड़का ही है, वह क्या करेगा । हेमू के पास विपुल धन था, युद्ध सामग्री थी और बड़ी सेना थी और इससे उसमें दुस्साहस आ गया । वह 40,000 सवार, 1000 हाथी, 51 बड़ी तोपें और 500 छोटी तोपें लेकर रवाना हुआ ।

तर्दी बेग ने सामना करने की तैयारी की । 6 अक्टूबर, 1556 को हेमू दिल्ली के निकट आ पहुंचा । उसने तुगलकाबाद में अपने डेरे लगाये । कितने ही वीर लोगों ने सलाह दी कि हेमू पर रात में हमला किया जाये और जब तक बादशाह की सेना न आ जाये तब तक दुर्ग को दृढ़ किया जाये परन्तु साहसी वीरों ने कहा कि तुरन्त लड़ाई की जाये । 7 अक्टूबर 1556 को दोनों सेनायें व्यूहबद्ध हो गयीं । दोनों पक्ष के वीर प्राणपण से लड़े। शत्रु के 3000 से अधिक सैनिक मारे गये । तब हेमू ने 300 अच्छे हाथी और एक सेना एकत्र की और घोर युद्ध करने के लिए तैयार हो गया । इस युद्ध में तर्दी बेग खां के साथियों ने साहसपूर्वक लड़ाई नहीं लड़ी । मौलाना पीर मुहम्मद शेखानी समरभूमि से भाग गया । वह तर्दी बेग खां को नष्ट करना चाहता था । तर्दी बेग खां के भी पैर नहीं टिके । हेमू ने तर्दी बेग खां का पीछा नहीं किया । उसने दिल्ली में प्रवेश किया। अब उसका दम्भ बहुत बढ़ चुका था ।

अकबर की हेमू पर चढ़ाई

यह खबर सुनते ही अकबर ने आदेश दिया कि हेमू को दण्ड देने के लिए सेना शीघ्र प्रस्थान करे । अभी सिकन्दर का भी दमन पूरा नहीं हुआ था इसलिये खिजर ख्वाजा खां को इस काम के लिए रवाना करके अकबर ने हेमू के विरुद्ध प्रयाण किया । तर्दी बेग खां और अन्य अफसरों को फरमान भेजा गया कि वे हतोत्साह न होवें और थानेश्वर में सब एकत्र होकर शाही सेना के आगमन की प्रतीक्षा करें । दूसरे दिन शाही सेना ने सरहिन्द के पास अपने डेरे लगाये । हारे हुए अफर और अलीकुली खां शेबानी भी सरहिन्द

के पास आ पहुंचे थे । वे शाही फरमान की प्राप्ति से पहले ही वहां आ गये थे । जब उन्होंने अकबर को सलाम किया तो उसने उन पर कृपा प्रकट की ।

बैराम खां तर्दी बेग खां को अपना विरोधी मानता था और उससे सदैव डरता था । तर्दी बेग भी बैराम खां को पछाड़ने का अवसर देखा करता था । इन दोनों में धार्मिक कट्टरता थी । इसलिये भी वे एक-दूसरे को समाप्त करना चाहते थे । बैराम खां ने समझा कि तर्दी बेग खां पराजित हो चुका है । इसलिये यह उसका वध करने के लिये उपयुक्त अवसर है । बैराम खां के पीर मुहम्मद के द्वारा तर्दी बेग को अपने मकान पर बुलवाया और कुछ बहाना करके वह बाहर निकल गया । तब उसके नौकरों ने तर्दी बेग का वध कर डाला । उस समय अकबर पक्षियों का शिकार करने गया हुआ था। जब वह सायंकाल वापस लौटा तो खानखाना ने पीर मुहम्मद के द्वारा कहलाया कि "मैंने राजभक्ति के कारण तर्दी बेग खां को मरवाया है । उसने बहुत बड़ा अपराध किया था । ऐसे अपराधों की ओर से आंखें बन्द नहीं करनी चाहिये । यदि मैं आपसे यह अनुमति लेता तो आप अपनी दयालुता के कारण मुझे रोकते और फिर सेना में राज्यद्रोह फैल जाता और गड़बड़ मच जाती । मुझे आश है कि आप मुझे क्षमा करेंगे और मेरे कार्य का अनुमोदन करेंगे । अकबर ने खानखाना की बात मान ली ।"

दुर्भिक्ष

इस समय नगरों और गांवों में बड़ा दुर्भिक्ष था और दिल्ली प्रान्त में तो यह भयंकर था । सोना मिल सकता था परन्तु अन्न नहीं। मनुष्य, मनुष्य को खा जाता था । वह दुर्भिक्ष दो साल तक चला, परन्तु एक वर्ष तो यह अत्यन्त दारुण था ।

दोनों पक्ष की अग्रसेनायें

अकबर की ओर से कई बड़े-बड़े वीर सरदारों के साथ अग्रसेना भेजी गई। इसका नेतृत्व अलीकुली खां शेबानी के हाथ में था । बैराम खां के निजी आदमी भी इनमें सम्मिलित थे । जब हेमू को इसका पता लगा तो उसने भी अपना तोपखाना आगे भेजा।

इसका नेतृत्व मुबारक खां और बहादुर खां के हाथ में था । तोपखाने ने पानीपत की ओर प्रयाण किया जो दिल्ली से तीस कोस की दूरी पर है । इसकी खबर पहुंचने पर अकबर की सेना ने आक्रमण करने के लिए शीघ्रता से प्रयाण किया । इधर हेमू ने भी अपनी सेना का व्यूह बनाया । दायें, बायें और मध्य भाग का नेतृत्व बड़े-बड़े अफसरों को दिया । स्वयं हेमू ने 500 बड़े-बड़े हाथी अपने साथ लिये जो ऊंची-ऊंची इमारतों को विध्वंस कर सकते थे और दृढ़ वृक्षों को उखाड़ सकते थे । हेमू स्वयं एक हाथी पर सवार था । उसके महावत का नाम कायम था । 5 नवम्बर, 1556 को खबर आई कि शत्रु आ पहुंचा है और उसके साथ इतनी बड़ी सेना है । बैराम खां ने सेना के सामने जाकर सब स्थिति देखी । शाहिनशाह की ओर से उसने सैनिकों को वचन दिया और धमकाया भी । फिर वीर लोगों ने खबर दी कि विजय हो गई । शाह कुली महरम हेमू को बन्दी बनाकर अकबर के सामने लाया था ।

हेमू ने अपने अनुभवीं सैनिकों और शक्तिशाली हाथियों पर भरोसा करके शाही सेना पर आक्रमण किया था । वह हवाई नामक एक हाथी पर सवार था । उसने बड़ी वीरतापूर्वक युद्ध किया । जब घमासान युद्ध हो रहा था तो हेमू की आंख में तीर लगा जो पार हो गया । तब उसके साथी हतोत्साह हो गये और उसकी सेना हार गई। तब शाह कुली खां हेमू के हाथी के पास पहुंचा । वह नहीं जानता था कि वह हेमू का हाथी है । वह तो महावत को मार कर हाथी पर कब्जा करना चाहता था । महावत ने हेमू की ओर संकेत किया तो महावत को तो बचा दिया गया और उस हाथी को लेकर शाहकुली खां अकबर के पास पहुंचा । हेमू को बांध रखा था । वह किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देता था । तब बैराम खां खानखाना ने अकबर से प्रार्थना की कि हेमू को तलवार से मार दे और गाजी बन जावे। अकबर ने कहा कि मेरी आत्मा बन्दी को मारने के लिए प्रेरणा नहीं देती है । अन्त में बैराम खां ने हेमू पर तलवार चलाकर उसका वध किया । यदि हेमू को कारागार में रखा जाता और उससे शाही सेवा करने को कहा जाता तो वह अच्छा सेवक सिद्ध होता । अकबर जैसे दूरदर्शी महापुरुष के अधीन वह क्या काम नहीं कर सकता

था। हेमू का सिर काबुल और उसका धड़ दिल्ली भेजा गया। वहां उनको सूलियों पर टांगा गया।

इससे पहले भारतवर्ष का कोई शासक ऐसा नहीं था जिससे हेमू का-सा साहस और शौर्य हो। यह वीरपुरुष था। इसके पास अनुभवी सैनिक थे, योग्य अधिकारी थे, बड़ा तोपखाना था और कितने ही शक्तिशाली हाथी थे।

सिकन्दर सूर

जिस दिन यह महान् विजय प्राप्त हुई, उसी दिन सिकन्दर खां उजबेग को भागने वालों का पीछा करने के लिए और दिल्ली की रक्षा करने के लिए भेजा गया। उसको बहुत-सा लूट का माल मिला। दूसरे दिन विजयी सेना भी दिल्ली आ पहुंची तो सब प्रकार के नागरिकों ने बाहर आकर उसका स्वागत किया।

राजा बिहारीमल

मजनू खां काकशाल ने अकबर से निवेदन किया कि राजा बिहारीमल बड़ा स्वामिभक्त है। नारनौल के घेरे के समय इसने अपनी स्वामिभक्ति का परिचय दिया है। तब आदेश हुआ कि राजा को प्रस्तुत किया जाये। राजा ने आज्ञा का पालन किया तो, उसको आज्ञापालन का पुरस्कार प्रदान किया गया। फिर राजा और उसके पुत्रों को तथा अन्य रिश्तेदारों को खिल्लतें दी गईं और विदा लेने के लिए उनको दरबार में हाजिर किया गया। उस समय अकबर एक उन्मत्त हाथी पर सवार था जो नशे के कारण इधर-उधर दौड़ रहा था। लोग डर कर एक ओर हट रहे थे। एक बार वह इन राजपूतों की ओर भी दौड़ा परन्तु वे लोग अपने स्थान पर अचल खड़े रहे। जब अकबर ने उनकी दृढ़ता देखी तो वह प्रसन्न हुआ और राजा के विषय में पूछताछ की और कहा कि "तुमको निहाल किया जायेगा।"

पुरस्कार और पदोन्नति

विजय के उपरान्त हर्ष मनाया गया, दावतें दी गईं, पुरस्कार प्रदान किये गए। जिन लोगों ने स्वामिभक्ति और वीरता का काम

किया था, उनकी पदोन्नति की गई । अली-कुली खां शेबानी को खानजमा की उपाधि देकर सम्भल और दोआब के अन्य परगनों का जागीरदार बनाया गया । अब्दुल्ला खां उजबेग को, सुजाअत खां की उपाधि प्राप्त हुई और उसको सरकार काल्पी का फौजदार नियुक्त किया गया । इस्कन्दर खां को खान आलम और मौलाना पीर मुहम्मद शेखानी को नासिर उल-मुल्क की उपाधि दी और उनको बादशाह की निजी सेवा में रखा गया । कियां खां को आगरा प्रदेश का हाकिम नियुक्त किया गया । दरबारी अधिकारियों को अकबर ने सब स्थानों पर भेज दिया जिससे भारत में शान्ति स्थापित हो गई ।

हाजी खां और हेमू का पिता

इसी समय अकबर के कान में यह बात पड़ी कि शेरखां अफगान का दास हाजी खां जो बड़ा साहसी और दूरदर्शी है सेना खड़ी कर रहा है और अलवर में स्वतन्त्र रूप से काम कर रहा है। यह भी सुना गया कि दुर्भागी हेमू का पिता और पत्नी तथा उसकी सम्पत्ति उसी सरकार में है । इस विषय में सेवा करने के लिए नासीरूलमुल्क को नियुक्त किया गया और उसको बहुत-से विश्वस्त और स्वामिभक्त अनुचर दिये गये । विजयी सेना की शक्ति से डर कर हाजी खां भाग गया । अलवर और मेवात का सारा इलाका शाही नौकरों के हाथ में आ गया । तब शाही सेना देवती मचारी की ओर चली जहां हेमू का कुटुम्ब रहता था । यह दृढ़ स्थान था। वहां बड़ी लड़ाई हुई । हेमू के पिता को जीवित पकड़ कर नासिरूलमुल्क के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो उससे अपना धर्म बदलने के लिए कहा । उस वृद्ध पुरुष ने उत्तर दिया, "मैं 80 वर्ष से अपने इष्टदेव की पूजा कर रहा हूं और अपने धर्म पर आरूढ़ हूं । अब इस अवस्था में मैं धर्म क्यों बदलूं और जीवन के भय से तथा तुम्हारे धर्म को समझे बिना ही मैं तुम्हारे धर्म को क्यों स्वीकार करूं ।" पीर मुहम्मद ने इन शब्दों को सुना भी नहीं, तलवार से उस वृद्ध को समाप्त कर दिया ।



इतिहासकारों से प्रश्न

१. वैज्ञानिक इतिहास विभाजन तिथिक्रम के आधार पर पृथ्वी ग्रह के प्रथम मानव स्वायम्भुव मनु के जन्म सृष्टि सम्वत् से क्यों न प्रारम्भ किया जाये ?

२. ३१०२ ई.पू. कलियुगारम्भ से पहले के वेद, मानव धर्मशास्त्र मनुस्मृति, रामायण, महाभारत तथा पुराण साहित्य के आधार पर सतयुग, त्रेता, द्वापर ३१०२ ई.पू. से पूर्व तथा कलियुग सम्वत् के प्राचीन विभाजन के आधार पर ग्राम्य से लेकर जनपद स्तर तक पुरातात्विक संदर्भ विद्यमान हैं तो फिर इन्हें स्वीकारने में क्या बाधायें हैं ?

३. प्राचीन साहित्य के अनुसार सतयुग का समय वह है जब पृथ्वी पर गंगा नदी नहीं थी । त्रेतायुग के समय राजस्थान में समुद्र था । द्वापर में रामेश्वरम् द्वीप भारत से जुड़ा था । कलियुग के प्रारम्भ से पहले द्वारका तथा रामेश्वरम् द्वीप भारत से जुड़े थे । कलियुग के प्रारम्भ में द्वारका तथा रामेश्वरम् द्वीप बन गये । इन भौगोलिक परिवर्तनों से काल मापन क्यों नहीं किया गया ?

४. १९५ करोड़ वर्ष पूर्व सृष्टि के स्वायम्भुव मनु की जन्म भूमि पुराण वर्णित एवं लोक प्रसिद्ध ब्रह्मपुरी लोक पाल तीर्थ-हेमकूट पर्वत हेमकुंट साहिब, प्रथम राज्य ब्रह्मावर्त तथा राजधानी बर्हिष्मती बराहकलां खरकराम जींद हरियाणा इतिहास की पाठय पुस्तकों में न होने के क्या कारण हैं ।

५. अभाव भी प्रमाण होता है अतः जब तक स्पष्ट विरुद्ध प्रमाण न मिलें विश्व के प्राचीनतम ८९ युधिष्ठिर सम्वत् के तिथि युक्त जनमेजय के किष्किन्धा ताम्र अभिलेख तथा कम्बोडिया के द्वापर सम्वत् युक्त संस्कृत अभिलेखों के आधार पर काल गणना क्यों न की जाये ?

६. महात्मा बुद्ध, चाणक्य, पतंजलि तथा समुद्रगुप्त के अभी तक कोई स्पष्ट तिथियुक्त अभिलेख प्राप्त नहीं हैं । भारतीय काल मान गणना तथा ऐतिहासिक यात्रा वृत्तों के अनुसार इनका समय क्रमशः लगभग १५०० ई.पू. ११०० ई.पू. ९५० ई.पू. ३०० ई.पू. क्यों न माना जाये ?

७. कलियुग सम्वत की प्रथम सहस्राब्दी ३१०२-२१०२ ई.पू., द्वितीय सहस्राब्दी २२०१-११०२ ई.पू., तृतीय सहस्राब्दी ११०१-१०२ ई.पू. चतुर्थ सहस्राब्दी १०२ ई.पू.-८९८ ई., पंचम सहस्राब्दी ८९९-१८९८ ई. तथा षष्ठसहस्राब्द १८९९ ई. से वर्तमान यह काल विभाजन क्यों न स्वीकार किया जाये ?

८. पूर्वोक्त १० काल खण्डों में प्रचलित सम्वतों के

प्रवर्तकों को कालक्रम का आधार स्तम्भ मानते हुए शकारि विक्रमादित्य ५७ ई.पू. तथा शालिवाहन ७८ ई. को स्वतंत्र भारत में भी पूर्वाग्रही मनगढ़न्त आर्य-द्रविड़, वैदिक-अवैदिक, मूल निवास स्थान, भाषा व धर्म पंथ जैसे कृत्रिम विवादों के स्थान पर ऐतिहासिक चरित्र के रूप में मान्यता क्यों नहीं दी गई है ?

९. विश्ववाद की मानवता पर आधारित स्वातंत्र्य समर सेनानी जननायक क्रान्तिवीरों का इतिहास तथा प्रहलाद, भरद्वाज भरत, विभीषण, योगेश्वर श्री कृष्ण ३१२६-३१०२ ई.पू. जरत्कारू जरथुस्त ३१००-३००० ई.पू. चाणक्य, पतंजलि, विद्यारण्य, तुलसीदास, समर्थ रामदास, प्राणनाथ, तात्याटोपे १८१०-१९०९ ई. दयानंद, विवेकानंद, अरविन्द, महेश, प्रभुपाद, तुलसी तथा गोवा के समाज सेवी ब्रह्मानंद १९१८-२००३ ई. जैसे संतों को विदेशी सिकन्दर जैसे दूसरों की सम्पत्ति लूटने वाले हत्यारों के स्थान पर इतिहास के स्वर्णाक्षरों में क्यों न लिखा जाये ?

१०. प्रथम विश्व युद्ध-रावणातंक नाश, द्वितीय विश्व युद्ध महाभारत, तत्पश्चात् तृतीय तथा चतुर्थ २०वीं शताब्दी ईस्वी में हुए। भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सिन्धुतट पर, द्वितीय सरस्वती तट पर, तृतीय व चतुर्थ पानीपत में, पांचवां अरावली के जंगलों में, छठा सूरत के समुद्र तट पर, सातवां पलासी में, आठवां पानीपत कुरुक्षेत्र में तथा नवां १८५७ का स्वातंत्रता संग्राम सम्पूर्ण भारत में तथा दशवां महात्मा गांधी की सम्प्रेरणा से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में जो कि वर्तमान में भी पृथ्वी एक राष्ट्र हेतु मानवता का विचार क्रांति स्वातंत्र्य समर वसुधैव कुटुम्बकम् के ध्येय से अध्यात्म यज्ञ के रूप में सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है । प्रकृति पूजा के सनातन लोक धर्म मानवता के प्रसार से मानसिक प्रदूषण की समाप्ति से पर्यावरण की सुरक्षा होगी । व्यक्तिवाद के स्थान पर मानवतावाद एवम् प्रकृति पूजा की लोक संस्कृति ही वैज्ञानिक लोक धर्म है इस सत्य के प्रचारार्थ आपका क्या व्यक्तिगत योगदान सम्भव है ?

विश्व बन्धुत्ववादी पुरातत्वविद् इतिहासकारों के इन प्रश्नों के रचनात्मक उत्तर मानवीय मूर्खता के कारण मनुष्य-मनुष्य में किए जा रहे भेदभावों, प्रचलित कुप्रथा, पाखण्ड, कट्टरता, अंधविश्वास तथा क्रूरता को समाप्त कर सनातन विश्व मानव धर्म का मार्ग प्रशस्त करेगा, यह हमारी आशा है । इस तारतम्य में स्वातंत्र्य समर सेनानी अंतिम भारतीय इन्द्रप्रस्थेश्वर हेमू विक्रमादित्य को स्वर्णाक्षरों से अलंकृत करना-राष्ट्रयज्ञ में आत्म समर्पण करने वाली हुतात्माओं का अभिनंदन है ।

शोधकार्यम्-**डॉ० उमा पाण्डेय 'भरद्वाज'**, महासचिव
मानवता कुलम्, समन्वय कुटीरम्, ई-१०५२,
राजाजीपुरम्, लखनऊ-२२६०१७, उ.प्र.

डॉ० कृष्णनारायण/उमा पाण्डेय भारद्वाज रचित साहित्यम्

१. स्वयंवरम् वीथि नाटकम्	१९८६	१०/-
२. लोक जीवने संस्कृतम्	१९८७	१०/-
३. रामकथा की ऐतिहासिकता (हिन्दी)	१९८८	५/-
४. संस्कृतामृतम् मराठी संस्कृतम्	१९८९	१०/-
५. मानवस्य मूलभाषा	१९९०	१०/-
६. मार्कोपोलो दृष्टं भारतम्	१९९१	१०/-
७. ग्रामे नगरे वने गृहे	१९९२	१०/-
८. मानवता सूत्रम्	१९९३	५/-
९. प्रज्ञा प्रतिशतम्	१९९४	५/-
१०. धम्मपद समण सुत्तयोः तुलनात्मकम् अध्ययनम्	२०००	१००/-
११. प्रयोजन मूलक हिन्दी यात्रा	१९९४	५/-
१२. वेद शतकम्	१९९४	५/-
१३. अयोध्या से रामेश्वरम् (यात्रा वृत्तान्त)	१९९४	१०/-
१४. स्वयं चिकित्सा	१९९५	१०/-
१५. मानवता विजयम् (सानुवाद)	१९९५	२५/-
१६. स्नेह संवादः (सानुवादः)	१९९६	२८/-
१७. गोस्वामी उपन्यास	१९९६	१०/-
१८. स्वस्थ संस्कृत जीवनम्	१९९७	५०/-
१९. रामायण कालिकेतिहासः	१९९७	५०/-
२०. भारतस्य प्रसिद्ध पर्यटकाः	१९९८	१०/-
२१. श्री मुक्तिनाथ तीर्थ यात्रा (नेपाल)	१९९९	१०/-
२२. हम मानव हैं पृथ्वी वासी (कविता संग्रह)	२०००	१०/-
२३. वसुधैव कुटुम्बकम्	२००१	२०/-
२४. मानवता यात्रा	२००२	१००/-
२५. संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य (बाल काव्य)	२००३	२०/-
२६. नयन दृष्टम् ऐतिहासिक भारतम्	२००३	४००/-
२७. संवत् प्रेरक शालिवाहन	२००४	२०/-
२८. प्राकृतिक जीवन	२००४	१००/-
२९. सत्यमेव जयते ऐतिहासिक हिन्दी महाकाव्य	२००५	२००/-
३०. अश्वमेध आयोजक सेनापति पुष्य मित्र	२००६	२०/-
३१. विश्वेतिहास तिथिक्रमः	२००८/५११०	५००/-
३२. वेदयात्रा	२००८/५११०	२०/-
३३. मानवस्य मूलभाषा	२००८/५११०	१००/-
३४. काव्यलता मञ्जरी (संस्कृतरचना संकलनम्)	२००९/५१११	१००/-
३५. विश्व का वास्तविक इतिहास		मुद्रण में
३६. Chronology of the World		मुद्रण मे
३७. विश्वधर्मः सनातनः		मुद्रण में
३८. रामायणकालीन विश्वम्		मुद्रण में
३९. वैदिक सरस्वती सिन्धु संस्कृतिः		मुद्रण में

पुस्तक प्राप्ति स्थलम्–

१. पुस्तक भारती, भारतीय विद्या भवन
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१, दूरभाष २३३८१३६९
२. तपोभूमि कुण्डई, गोवा, दूरभाष ०८३२-२३९५५९०
३. समन्वय कुटीरम्, ई-१०५२, राजाजीपुरम्, लखनऊ-२२६०१७, दूरभाष २४१६८९७
४. मानवता केन्द्रम्, डी-१०३, कर्जन रोड हॉस्टेल, नई दिल्ली-१, दूरभाष २३३८५४८
५. आलोक प्रकाशन, २६०७ बी, नई सड़क, दिल्ली-११०००६, दूरभाष २३२६५६३४



लोकजीवने संस्कृतप्रचारक–

डा० कृष्णनारायण पाण्डेयस्य जीवनवृत्तम्

1. पदनाम–संयुक्त निदेशक (राजभाषा) आकाशवाणी महानिदेशालय नई दिल्ली-110001
सहचित्रभाष : 011-23421064, चलभाष : 9868859878

2. स्थाई निवास–समन्वय कुटीरम्, ई-1052, राजाजी-पुरम्, लखनऊ-226017, दूरभाष 0522-2416897
अणुप्रेष–humanityclub@yahoo.com,
[illegible]–www.manavtakulum.com

3. पितृ नाम–पं० महावीर प्रसाद पाण्डेय, ग्राम पत्रालय-पड़रीकलां, जनपद उन्नाव, उ०प्र०-209801

4. जन्म तिथि–15 जनवरी 1950 ई०

5. [illegible]–एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, योग प्राकृतिक चिकित्सा जीवनविज्ञान तथा [illegible] प्रशासाचार्य), पी.एच-डी. (रामकथायाः ऐतिहासिकता), एल.टी., एलएल.बी, [illegible] संग्रहालय संस्थान, नई दिल्लीतः कला इतिहास संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान विषये [illegible] पाठ्यक्रम प्रमाण-पत्रम्, शासकीय प्रबन्धन कार्यक्रम, जयपुरे प्रशिक्षणम् 1999।

6. [illegible]–(क) अध्यापनम् 14 वर्ष अध्यापक तथा आकाशवाणी लखनऊ सहायक [illegible] (शैक्षिक प्रसारण) पद द्वारा। (ख) साहित्यम्–कविता, लेख, रूपक, नाटक [illegible] प्रसारण प्रस्तुति तथा संपादनम् आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा पत्र पत्रिका माध्यमेन। (ग) प्रशासनम्–हिन्दी अधिकारी आकाशवाणी/सहायक निदेशक 15; 11.1988 ई०तः/उप निदेशक/संयुक्त निदेशक (राजभाषा)। (घ) प्रकाशनम्–हिन्दी इंग्लिश संस्कृते प्रकाशित शोधलेख सं.-100, पुस्तक सं. 35
1. मानवता यात्रा, 2. वसुधैव कुटुम्बकम् (संस्कृत/इंग्लिश रचना संग्रह), 3. मानवता विजयम् (हिन्दी काव्यानुवाद सहितम्), 4. हम मानव हैं पृथ्वीवासी (हिन्दी रचना संग्रह), 5. सम्वत् प्रवर्तक विक्रमादित्य (काव्य), 6. नयन दृष्टम् ऐतिहासिक भारतम्, 7. प्राकृतिक जीवन, 8. सत्यमेव जयते (इतिहास महाकाव्य), 9. अश्वमेधायोजक सेनापति पुष्यमित्र। पी०एच-डी शोध परीक्षक–छत्रपति शाहू विश्वविद्यालय कानपुर (उ.प्र.)

7. पुरस्कृतम्–1. स्वस्थ संस्कृत जीवनम्, उ.प्र. संस्कृत संस्थानम् अकादमी द्वारा 1999 ई. 2. रामायण कालिकेतिहासः अखिल भारतीय गद्य रचना हेतु प्रथम पुरस्कार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा 2000 ई. 3. "गोस्वामी" उपन्यास मानससंगम कानपुर द्वारा 2001 ई. 4. सिन्धु दर्शन लेह सन्दर्भे–नेहरू युवा केन्द्र समारोह 30 मई तः 3 जून 2002 पर्यन्तम् संसाधन व्यक्ति रूपे भाग ग्रहणम् 5. नयन दृष्टम् ऐतिहासिकम् भारतम् यात्रावृत्त, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् द्वारा पुरस्कृतम् 2004 ई.

8. कृण्वन्तो विश्वमार्यम्–पर्यावरण, संस्कृत तथा मानवीय मूल्य संरक्षण हेतु मानवता कुलम् HUMANITY CLUB मित्रता मंच विश्व कवि संसद संस्थापनम्।
सदस्यता शुल्कम्–प्रतिवर्षम् वृक्षारोपणम् एवं प्रतिदिनम् परोपकारः

9. मानवता अभियानम्– ब्रह्मावर्तम् बिठूर, नैमिषारण्यम् सगरेश्वर बालेश्वरी पाण्डुपुरी सदृश धर्मस्थलानि भवन्तु संस्कृत संस्कृति संयुक्त संस्कृत भाषी तीर्थानि इति प्रयासः। रचनात्मक संस्कृत पत्रकारिता द्वारा परिवर्तन हेतु प्रोत्साहनम्–प्रभातम मासिकम्, नवप्रभातम् शोध पत्रिका, भारतवर्षम् भित्तिपत्रम्।